

बिहारीपन



इश्क़

बिहार और इश्क़



निरंजन तिवारी

बिहारीपन इश्क़

बिहार और इश्क़

निरंजन तिवारी

पहले मेरे बारे में जान लीजिए, काहें कि कहानी तो कहेंगे हीं

'निरंजन' हिंदी में कम उम्र का वो चर्चित नाम है, जिसके संघर्ष पर अगर फिल्म बनाई जाए तो वह भी चर्चित हो जाए। 'मिस्टर रोमांटिक' लिखकर कम उम्र का सबसे चर्चित लेखक जो बना वह 'निरंजन' है। शुरुआत में कई प्रकाशकों ने यह कहते हुए प्रकाशित करने से मना कर दिया कि उन्नीस वर्ष कोई लेखक बनने की उम्र है? लेकिन जिसके सिर पर जुनून चढ़कर बोलता है उसे कौन रोक सकता है?

निरंजन के पिताजी श्री सूर्यवंश तिवारी पुलिस विभाग में हैं और माताजी गृहणी हैं। बचपन से हीं संस्कार ठुंस-ठुंस के भरा गया था।

पढ़ाई-लिखाई कि बात करें तो बिहार के बिक्रमगंज से मैट्रिक और आरा से इंटरमीडिएट किये आ अब उत्तर प्रदेश के बनारस से ग्रेजुएशन और कम्प्युटर कर रहे हैं।

'बिहारीपन इश्क' मस्ती वाला शानदार उपन्यास है जो मिजाज खुश कर देगा। अगर आपका भी कोई दोस्त डिप्रेशन में रहता है.... सॉरी उदास रहता है तो पढ़ने के लिए बोलिएगा... बेचारा खुश हो जाएगा...ठीक है।

इतना हीं कहकर मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। जय हिन्द! जय भारत!

कुछ इश्क की दास्तान अधूरी होती है, उसी अधूरी दास्तान के लिए, आपके लिए, आपके प्यार के लिए, सबके लिए

सच्चे प्यार के लिए... प्यार में इंतजार के लिए....

बिहार के लिए
देश के लिए
सामाज के लिए
दोस्तों के लिए
प्यार के लिए

"बिहारी मतलब टैलेंटेड। यानी पढ़ाई-लिखाई में सजग, तेजतर्रार। लेकिन बिहारी इश्क़ भी करते हैं तो वैज्ञानिक तरीके से करते हैं। बिल्कुल बिहारीपन की तरह।"

-बिहारीपन इश्क़

BIKRAMGANJ

सुनहरी यादों वाला एक छोटा सा शहर

(01)

मैं लव पांडेय लेकिन रूकिए मैं वो नहीं जो आप पढ़ रहे हैं। अंग्रेजी का Love Pandey... आशा है अब आप समझ गये होंगे। बिहार से हूं और हां आपको पता होगा तो ठीक है, नहीं तो मैं बता देता हूं "बिहारी इश्क भी करते हैं तो वैज्ञानिक तरीके से करते हैं। कितना इश्क करना है और कितना बिहारीपन दिखाना है, ये उन्हें भलीभांति पता होता है।"

वैसे तो हर किसी की प्रेम कहानी होती है। मेरी भी है। लेकिन मेरी लवस्टोरी उतना ही इंटरस्टिंग है जितना कि हिन्दूस्तान-पाकिस्तान का मैच।

बात तब कि है जब मैं आठवीं में पढ़ता था। मेरे लिए सबकुछ नया था।

मेरा आज स्कूल में पहला दिन था। पहली बार जब उससे नजरें मिली तो मेरे लबों पर अचानक मुस्कुराहट बिखर गई। ऐसा लगा कि उसकी तस्वीर मेरे आंखों में कैद हो चुकी है। मेरे तन मन में तरंगे दौड़ने लगी थी। ऐसा लगा जैसे ओस की बूंदों की तरह मेरे दिल में उसकी हर अदा पैठ बना रहा हो। मैं एकतरफा उसके इश्क में बेकाबू हो रहा था। उसकी आंखें समंदर की तरह थी जिसमें ना जाने प्यार और नफरत के कितने रंग होंगे! उसके खूबसूरत चेहरे पर काली जुल्फे, घटा सी बिखरी हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे चांद को निहार रहा हूं।

कई सपने संजोकर मैंने दाखिला लिया था। जैसे ही मैं अपने क्लासरूम में घुसा मेरी नजरें सीधे उस लड़की से जाकर टकराई। उसे देखकर मैं अपनी बेढंग हालत को सुधारने का प्रयास करने लगा। वैसे मेरे जगह कोई भी लड़का होता तो यही करता। पता नहीं लड़कियों में कौन सा विटामिन मिलता है जिसे पाने के लिए लड़के लालायित रहते हैं।

उसकी रेशमी जुल्फें उसके चेहरे को ढके हुए था। मैं उसे ठीक से नहीं देख पा रहा था। वह अपने नोटबुक पर कलम कुरेदने में मशगूल थी। मैं बुद्धू रोमियोगिरी दिखाते हुए उसे एकटक निहार रहा था। अचानक मेरी नजरें क्लास के लड़कों पर पड़ी जो खिलखिलाकर हंस रहे थे। मैं समझ गया वे मेरे बेपनाह एकतरफा इश्क को देखकर हस रहे थे। शर्म के मारे मेरे चेहरे की रंगत उड़ गई।

फिर सबसे पिछले बेंच पर अपना बैग पटककर राहत का साँस लिया। लड़कियां अपने काम में व्यस्त थी और लड़के इशकिया निगाहों से उन्हें घूरकर अपनी आंखें तृप्त कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे मनचाहा वरदान पा रहे हो।

कुछ देर बाद क्लास टीचर क्लास में दाखिल हुए और मेरी नजरें किताबों में सिमट गई। मैं उसे फिर से देखने कि कोशिश कर रहा था पर सबसे पीछे बैठने के कारण वह मेरी नजरों से ओझल हो गई थी। मेरे मन में इश्क की लहरें दौड़ रही थी। ना जाने ऐसा क्यों लग रहा था कि पहली नजर में ही उसकी आदत सी हो गई है। अचानक टीचर के आ जाने से मेरा ध्यान भंग हो गया। मैं उस पल का बेसब्री से इंतजार करने लगा जब वह मेरे करीब हो और उससे कुछ मीठी बातें हो।

०००० ०००० ००००

तीन घंटे बाद, लंच रूम

मेरे मन में उसकी यादें प्रतिध्वनि की तरह गूंज रही थी। मैं लंच रूम के अंदर बेकाबू अंदाज में उसे ढूंढ रहा था। तेजी से चलते हुए अचानक एक लड़की मेरे आगे आ गई और मैं टकरा गया। वह खुद को संभाल ली पर उसका लंच बॉक्स नीचे जमीन पर गिर गया। अब मैं उसके सामने एक कातिल की भांति खड़ा हो गया। मेरे चेहरे से रंगत गायब हो गई थी। अचानक मेरे जुबान से सॉरी निकल पड़ा।

उस लड़की का चेहरा उसकी जुल्फों से घिरा था जिसे मैं देखने की कोशिश कर रहा था। पता नहीं मेरे अंदर इतनी हड़बड़ी कहां से आ गई थी! मैं खुद नहीं समझ पा रहा था कि मुझे क्या हो गया है! शायद ये सब उस लड़की के इशक में!

'ओह सॉरी। मैंने..'

मैं झुककर उसके लंचबॉक्स को उठाना चाहता।

'ओके ओके... रहने दो मैं उठा लूंगी। वैसे भी आजकल गिरे हुए को उठाता कौन है!' उसके चंद शब्दों से मुझे गहरा आघात लगा और वाक्या भी यही था। 'आजकल गिरे हुए को उठाता कौन है?'

वह अपना लंचबॉक्स उठा कर चली गई। मैं उसे अब तक नहीं पहचान पाया था। खैर मैं सबसे पीछे जाकर बैठ गया। मैंने अचानक ध्यान दिया। मेरे बगल में वही क्लास वाली लड़की बैठी थी। मैं उससे प्यार भरी कुछ खट्टी कुछ मीठी बातें करना चाहता था पर मेरे अंदर हिम्मत नहीं हो रहा था। काफी देर से उसे देख रहा था। उस खूबसूरत लड़की का नाम जानना चाहता था। आखिरकार मैंने तय कर लिया कि वो नहीं बोलेगी, मुझे ही बोलना पड़ेगा।

'हेलो! आई एम लव पांडे।'

बहुत हिम्मत करने के बाद मैं बिहारीपन अंदाज में यह चंद शब्द बोल पाया। मेरी धड़कनें तेज थी। मुझे यकीन नहीं था कि उसके तरफ से कोई जवाब आएगा। वह तिरछी निगाहों से मुझे घुरने लगी।

'प्राची पूर्वा'

वह अजीब निगाहों से देखते हुए जवाब दी।

उसका नाम मेरे मन में बार-बार खनकने लगा। उसके इन चंद शब्दों को सुनकर जैसे मेरे लबों पर मुस्कुराहट बिखर गया हो।

'कहीं तुम भी मेरे नाम को ऐसे-वैसे तो नहीं समझ रही हो?'

'व्हाट?' वह ऐसे चिललाई जैसे मैंने कोई गुनाह कर डाला।

'अंग्रेजी मे लव पांडेय... .एल.ओ.वी.इ(Love)'

मेरे नाम को सुनकर वह खुब हँसी।

'ऐसा अटपटा नाम कौन रखता है। इससे अच्छा प्रेम पांडेय रख लेते!'

'दोस्तों का काम ये। अच्छा छोड़ो तुम्हारा लंच टेस्टी है!'

मैं उसके लंचबॉक्स की तरफ ललचाई निगाहों से देखते हुए बोला। अचानक मेरे जुबान से हिंदी फिसल गई। और मेरे अंग्रेजी की धजियां उड़ गईं। अंदर ही अंदर दाँत दबाये खुद पर हँस रहा था।

'और तुम्हारा भी गाजर हलवा..

वह हंसने लगी। उसके कहने के लहजे से मालूम पड़ रहा था कि वह जबरदस्ती तारीफ कर रही हो।

'प्राची यह सिर्फ गाजर हलवा ही नहीं है इसमें मां का प्यार भी घुला हुआ है।'

'हाउ स्वीट!'

उसके होंठों पर फिर से मुस्कुराहट बिखर गया।

कुछ देर तक हम अपना लंच खत्म करने में ही लगे रहे। इसी बीच कभी-कभी हमारी नज़रें टकरा जाती। वह मुस्कुराती और मेरे दिल में इश्क की लहरें उठने लगती। उसकी आंखें बड़ी और आकर्षक थीं। ऐसा लग रहा था कि मैं इसकी खूबसूरती में डूब जाऊंगा।

'तुम बिक्रमगंज से ही हो?'

मैंने पूछा। वह अपने बाएं हाथ से बिखरी जुल्फें ठीक करने लगी।

'दरअसल यहाँ मेरा अपना घर नहीं है।'

'मेरा भी! वैसे कितने सालों से यहां रह रही हो?

'चार पांच साल और तुम?'

'सात-आठ साल।'

'ओ! पहले कहां पढ़ते थे?'

'गाँधी में।' मैंने जवाब दिया।

उससे बात करते हुए मुझे सुकून महसूस हो रहा था। ऐसा लग रहा था मेरे दिल को राहत पहुंच रहा हो।

'कहाँ से हो?' वह पुछी।

'दीवानपुर।'

'दीवानपुर!' वह चौकते हुए बोली।

ऐसा लग रहा है जैसे उसका इस जगह से गहरा व पुराना रिश्ता है।

'क्या हुआ? इसमें चौंकने की क्या बात है।'

'दीवानपुर मेरा ननिहाल है।'

'सच्चा! किसके यहाँ?'(मैं मजाकिया अंदाज में पूछा।)

मुझे लगा कि वो उल्लू बना रही हैं। नये लड़को को अक्सर स्कूल के पुराने क्लासमेट उल्लू ही बनाते हैं। स्कूल का ऑफिस बताना होता है तो टॉयलेट वाला रूम बता देते हैं। मेरे साथ गांधी स्कूल में हुआ था। कुछ लड़के तो अपने गर्लफ्रेंड से झूठा प्यार का रोल करवाते हैं। बाद में पता चलता है कि ये तो इमोशनल अत्याचार हो रहा था।

'रामेश्वर पांडेय।' उसकी तरफ से जवाब आया।

‘झूठी लड़की! मैंने तो तुम्हें वहां कभी नहीं देखा?’
‘दरअसल मैं वहां कम ही जाती हूं।’
‘ओ! ये बात है। अगली बार जाना तो मुझे जरूर बताना।’
‘ठीक है मिस्टर।’
‘अच्छा यह बताओ कि इतना बढ़िया लंच तुम्हारे लिए कौन बनाता है?’
‘मेरी मम्मी।’
‘ओ हो! प्यारे-प्यारे हाथों का है तो प्यारा तो होगा ही न!’
‘तुम मुझे अब मिस्टर कम रोमांटिक ज्यादा लग रहे हो।’
‘तो कह दो मिस्टर रोमांटिक।’

अब हम दोनों अपना लंच खत्म कर चुके थे।

‘वक्त आने पर कह दूंगी। फिलहाल कहना जरूरी नहीं है।’

वह कातिलाना अंदाज में मुस्कुराई। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। कुछ तो उसके प्यार से, कुछ उसके अंदाज से।

लंच के बाद बजी वार्निंग घंटी ने मुझे चौंकाया। मेरा यहां से जाने का मन नहीं कर रहा था। उससे और भी बातें करना चाहता था। मैं उससे कहना चाहता था कि उसकी हर एक अदा मुझे कातिल बना रही है। उसकी मुस्कुराहट मेरे लबों के हंसी की वजह बन गई है। मेरा रोम-रोम उसके इश्क की फुहारों में भीगते जा रहा है। वह पहली लड़की है जिससे बातें करते हुए मेरे दिल को सुकून मिल रहा है। लेकिन मैं तो सिर्फ सोच सकता था लेकिन कह नहीं सकता था।

०००० ०००० ००००

(02)

कुछ दिनों बाद

प्राची की नजदीकियाँ रोज दिल में नई कहानियां लिख रही थी। वह मेरे रुह में सांसो की तरह बस गई थी। उसकी मुस्कुराहट और प्यार भरी बातों की एक आदत सी हो गई थी। ना जाने ऐसा क्यों लगता कि वह नहीं तो कुछ भी नहीं वह है तो पूरा संसार अपना है। उसके खिलखिलाते चेहरे पर भीनी-भीनी मुस्कुराहट मेरे दिल को हर वक्त दहलाती रहती।

हर रोज स्कूल में बातें करना, जिंदगी को संवारने के लिए मीठे ख्वाब देखा जाना, बड़ा अच्छा लगता था। मैं हर रोज इस कसमकस में तड़प रहा था कि वो मेरे इश्क से बेखबर क्यों है?

मैं ए.बी पैलेस के मॉल में मम्मी के साथ कपड़े ले रहा था। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं? कौन सा कलर लूं? कभी-कभी ऐसा होता है कि हमारे लाईफ में बहुत सारे ऑप्शन आ जाते हैं और हम खुद उलझ जाते हैं। इस वक्त मेरे साथ यही हो रहा था। काफी सोचने के बाद मैंने तय किया कि प्राची तो है ही।

'मम्मी एक मिनट! जरा बाहर से कॉल करके आता हूं।'

'अरे रुक तो..!'

'बस एक मिनट।'

मैंने मम्मी को इशारे में कहा, अपने तर्जनी को आकाश की तरफ उठाकर। फिर फुसफुसाते हुए बाहर निकला- 'बस एक मिनट'
मम्मी कोई प्रतिक्रिया न देते हुए मुस्कुराई।

'हैलो प्राची!

'हां लव, पर तुम फुसफुसाकर क्यों बोल रहे हो?'

'अरे यार मम्मी हैं मेरे साथ..'

वह खूब हंसी।

'तो, क्या हुआ?' वह दबे मुस्कुराहट के साथ बोली।'

'अरे यार, कपड़े खरीदना है। कुछ समझ ही नहीं आ रहा है।'

'रूको मैं आ रही हूं।'

'हां, जल्दी आओ।'

'वैसे कहां हो तुम?' वह पूछी।

'ए.बी. पैलैस।'

'मैं बस एक मिनट में पहुंच रही हूं। आँटी को बता देना कि मैं आ रही हूं।'

'नहीं-नहीं!'

'तो फिर मैं खुद बता दूंगी।' कहकर वह मजाकिया अंदाज में हंसने लगी और फोन कट कर दी।

मैं तेजी से मॉल के अंदर आया। मेरी धड़कनें तेज थी। मुझे डर था कि कहीं प्राची हमारे बीच के संबंधों को बता न दे। मिडिल क्लास फैमिली में इसी बात का डर रहता है। सच कहूं तो मुझे लगता है कि मिडिल क्लास फैमिली चाहता है कि उनके बच्चे अपने इच्छानुसार कुछ भी न करें। यानी लाईफ उनकी और डिसीजन मां-बाप का।

मैं बार-बार गेट की तरफ नजरें दौड़ा रहा था। करीब तीन मिनट बाद वो लड़की मुझे दिखाई पड़ी। वह व्हाइट कलर के टिशर्ट और जींस में थी। टिशर्ट पर भूरे रंग कि प्रिंटेड लड़की किसी एंजल से कम नहीं थी। मेरे सामने से आ रही प्राची भी एंजल से कम न थी। सुर्ख नयनों पर दस्तक दे रही घुंघराली जुल्फें किसी पार्क में खिलखिलाते, मुस्कुराते फूलों के पंखुड़ियों जैसे मनमोहक थे। गुलाबी होंठों पर गुलाब जैसी मुस्कुराहट। मैं उसे निहारते हुए खो गया था।

'लभ...इसे देख!'

मम्मी सामने टंगे मैरून शर्ट को दिखाते हुए अपने बात को फिर से दुहराई। मेरे घर में सब 'लभ' कहकर पुकारते हैं। काहे कि भोजपुरिया में हिंदी और अंग्रेजी दोनों का हुलिया बिगाड़ के ऐसे कर दिया जाता है जैसे पागलखाने से पागल को निकाल कर चिड़ियाघर में दर्शनीय वस्तु बना दिया गया हो।

तबतक प्राची मेरे पास आकर मुस्कुरा रही थी। वह पहली बार मेरे मम्मी को देख

रही थी।

‘हैलो, ये शर्ट मुझपर कैसा लगेगा?’ मैंने प्राची से अजनबी अंदाज में कहा।

‘ठीक है लेकिन अच्छा नहीं है। आंटी आप कहें तो मैं देखूँ इनके लिए।’

‘अरे बेटा तुम तो खुद के लिए खरीदने आई होगी न?’ मेरी मम्मी बोली।

बेटी को बेटा कहने का चलन ऐसे चला है कि लड़कियां लड़कों जैसा भौकाल हेयरस्टाईल भी रख रही हैं और कपड़े भी पहन रही हैं। लड़कों को तो उल्लू कहती हैं लेकिन अब खुद उल्लू बनना कितना अच्छा लग रहा है!

‘तो क्या हुआ आंटी, मैं बाद में ले लूंगी।’ वह नाक सिकुड़ाते हुए बोली। हालांकि मुझे हीं चिढ़ा रही थी।

‘देखिये ना प्लीज!’ मैंने कहा।

‘आप नहीं, आंटी इजाजत दे तब।’

‘हाँ, देख लो बेटी। मुझे भी समझ में नहीं आ रहा है। फिर मैं तुम्हारे लिए खरीदवा दूंगी।’

कुछ हीं देर में प्राची मेरे मम्मी के साथ दोस्ती कर बैठी। मुझे नहीं लग रहा था कि वो इतना जल्दी सबकुछ मेंटेन कर लेगी। मुझे बहुत अच्छा लगा ये सब देख कर। कुछ देर बाद वह मेरे लिए शर्ट, टिश्र्ट और जींस लेकर आई। उसके हाँथों में ब्राउन प्रिंटेड टिश्र्ट, ब्लैक शर्ट और ब्लू जींस था।

‘आंटी कैसा है?’ वह कपड़े को मम्मी के सामने पेश करते हुए बोली।

कुछ देर तक मम्मी उन कपड़ों को निहारते रह गई। मतलब उसे बेहद पसंद आया। मुझे तो बस प्राची की हर पसंद, पसंद है।

‘अरे बेटी तुमने तो दिल हीं जीत लिया।’

‘और आपको मिस्टर... आपको कैसा लगा?’

‘बेस्ट!’ मैंने एक्विंग वाले अंदाज में कहा।

कुछ देर बाद मम्मी और प्राची में घनिष्ठता हो गई। वह मम्मी से बताई कि हमदोनो क्लासमेट हैं। फिर मम्मी का रिएक्शन कुछ इस तरह हुआ।

‘पहले क्यों नहीं बताया कि ये तुम्हारी क्लासमेट हैं?’

मैं कुछ नहीं बोला। बस प्राची के तरफ देखकर मुस्कुराया।

‘अच्छा प्राची, ये पढ़ता है या सिर्फ लफंदरगिरी करता है।’

‘आंटी, लव टेस्ट में टॉपर थे।’

प्राची के मुखारबिंद से अपनी तारीफ सुनने के बाद मुझे सेलिब्रिटी वाली फिलिंग आ रही थी।

अब हम प्राची के कपड़े लेने लेडिज कलेक्शन की तरफ बढ़े। उसने रेड कलर का एक कपड़ा पसंद किया जिसपर गोल्डन कलर के धब्बे थे। लेडिज कपड़े का नाम मुझे मालूम नहीं, पर खूबसूरत था।

‘कैसा है लव?’ प्राची मुझसे पूछी।

'तुमपर खिलेगा।' मैंने कहा।

मॉल के बाहर आने के बाद मेरा चेहरा उतर गया। उसके एक हाथ में थैला था मेरे दोनों हाथों में।

'ठीक है आंटी, बाय!'

'बाय प्राची!'

मैंने अपने थैले एक हाथ में लेकर अपने होंठों को उंगलियों से छुकर फ्लाइंग किया। बदले में प्राची ने मुझा दिखाया। मुझे अचानक हंसी आ गई।

'क्या हुआ?' मम्मी पलटकर मेरे तरफ देखी। मैं उनके पिछे था।

'कुछ नहीं मम्मी चलो।'

मैंने प्राची के तरफ इशारा किया-'नौ बजे कॉल करना।'

उसके होंठों से मुझे पता चला कि वह ओके और बाय कह रही है। फिर हमदोनो ने बाय का इशारा किया। रह-रहकर मैं उसे देख रहा था। अचानक वह मेरी नज़रों से ओझल हो गई। मेरा मन बेचैन हो गया। ऐसा लग रहा था कि वो अभी भी बाय कर रही है। मैंने फिर पलटकर देखा। वो सचमुच नज़रों से ओझल हो गई थी।

०००० ०००० ००००

09:00 p.m

मैं प्राची के कॉल का इंतजार कर रहा था। मेरे सामने नोटबुक था पर जेहन में प्राची की यादें थी। हर लम्हा मेरे उपर पहाड़ सा लग रहा था। अचानक फोन के अप्रिय वाइब्रेशन ने मेरा ध्यान भंग किया। प्राची का कॉल देखकर उछला और सीसे के कप में पड़ी चाय मेरे स्टडी टेबल से नीचे जा गिरी। वह कई हिस्सों में बंट चुका था।

दूसरे कमरे से पापा की आवाज मेरे कानों में गूँजी।

'क्या हुआ?'

'कुछ नहीं पापा!'

मैं फर्श पर बिखरे काँच के टुकड़ों को ध्यान से देख रहा था तबतक फोन फिर से वाइब्रेट करने लगा।

'हैलो मिस्टर!'

'येस स्पिकिंग मिस प्राची।'

'क्या कर रहे हो?'

'पढ़ रहा हूँ।'

'वाओ! कल टेस्ट के मार्क्स भी सुनाए जाएंगे।'

'मुझे याद है। तुम क्या कर रही हो?'

'डिनर..'

'व्हाट? खिलाओगी मुझे?'

'नो।'

'व्हाई?'

‘टेस्ट में फर्स्ट आने के बाद होगा..’

‘क्या होगा?’

‘पार्टी और क्या?’

‘यू आर कंजूस प्राची.. पता है तुम ललचाकर खिलाती भी नहीं हो।

‘टेस्ट में फर्स्ट आओ, खिलाऊंगी।’

‘मुझे लगता है तुम फर्स्ट आओगी।’

मैं कुछ देर तक काँच के टुकड़ों को उठाने में व्यस्त हो गया। मैंने प्राची के आवाज पर ध्यान ही नहीं दिया।

‘व्हाट आर यू डूइंग मिस्टर?’ वह झिझकते हुए बोली।

‘उठा रहा हूँ।’

‘क्या?’

‘अपने कर्म के फल को... काँच के टुकड़ों को!’

‘क्या किया तुमने?’ वह हंसते हुए बोली।

‘तुम्हारा फोन आया था तब काँच का कप नीचे गिर गया और टूट गया।’

‘यू आर सो फनी मिस्टर!’

‘यू टू! सुनो कल मिलता हूँ स्कूल में, और हाँ अपनी पार्टी फिक्स रखना। तुम्हारे हाथों से खाने का मन कर रहा है।’

‘ओके बाय! पता है मिस्टर मुझे भी तुम्हारे हाथों से खाने का मन कर रहा है।’

अचानक फोन कट गया। मैंने किताब बंद की और सपनों की दुनिया में खो गया। जब सुबह तुम मेरे हाथों में फोन था। सामने दीवार पर टंगी घड़ी ने मुझे धोखा ही दिया। 8:00 बज रहे थे और 9:00 बजे स्कूल जाना था।

०००० ०००० ००००

(03)

एजुकेशन ड्रॉप्स पब्लिक स्कूल

मेरी धड़कनें पेंडुलम की भांति दौड़ रही थी।

‘लव पांडेय..’ नीलू मैडम अंग्रेजी में पढ़कर कुछ देर तक मुस्कुराई फिर एकबार नाम रिपिट करके चिल्लाई।

उनका आवाज सख्त था। सारा क्लासरूम हरकत में आ गया। मेरा मिजाज बरसात में कड़क रहे बिजलियों सी हो गई। मुझे डर था कि मुझसे कोई भूल चूक तो नहीं हो गई। उनके हाथों में हल्के नीले रंग के कुछ कार्ड्स थे। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रही थी मेरा भय भी बढ़ता जा रहा था। उनके चेहरे पर कोई खास खुशी नहीं थी। अक्सर सख्त टीचर मुस्कुराहटों से दूर रहते हैं। पूरा क्लासरूम मेरे तरफ हैरत से देख रहा था।

‘लव पांडे...?’ वह मेरे पास आकर बोली।

‘यस मैम।’ मैंने खड़ा होकर कहा।

वे नीले कार्ड को मेरे डेस्क पर रखकर पोडियम की तरफ बढ़ गई। मैंने कार्ड को गौर से देखा

जिस पर 97% मार्क्स थे। पढ़कर मेरे चेहरे पर थोड़ी सी मुस्कुराहट तो जरूर बिखरी पर इसे पूरी तरह से खुशी नहीं कहा जा सकता था।

‘नाइंटी सेवन परसेंट!’ मैंने खुशी से उछलते हुए कहा।

मेरा आवाज नीलू मैडम तक पहुंचने के लिए काफी था।

‘ज्यादा खुश होने की जरूरत नहीं है फाइनल एग्जाम के मार्क्स नहीं हैं।’ उनके आवाज में अब भी कोई खुशी नहीं थी।

खैर मैं खुश था। मेरे मेहनत के हिसाब से ये मार्क्स सटिक थे। पापा मम्मी को खुश करने के लिए काफी था। मैंने नीलू मैडम को फिर एक बार देखा वह अपने पोज़ियम के पास चली गई थी और अगले कार्ड की तरफ घूर रही थी।

‘प्राची पुर्वा..’ नीलू मैडम का आवाज फिर एक बार पूरे क्लास रूम में गुंजा। प्राची खड़ी हो गई पर उसके चेहरे पर कोई मुस्कुराहट नहीं थी।

‘यस मैम!’ कहते हुए पोज़ियम की तरफ देखने लगी।

‘84 नॉट अ गुड मार्क्स।’ नीलू मैडम प्राची को कार्ड देते हुए बोल पड़ी। ‘फर्स्ट और सेकंड के बीच इतने अंक का फासला। मुझे लगता है तुम पढ़ाई नहीं करती हो।’

मैं प्राची के साथ हुए बर्ताव को देखकर काफी उदास हो गया। नीलू मैडम किसी के मार्क्स से संतुष्ट नहीं थी। उन्हें 100 में 110 मार्क्स लाने वाले स्टूडेंट्स चाहिए था जो कि दिन के उजाले में भी चिराग जलाकर ढूँढा जाए तो मिलना असंभव है। किसी महापुरुष ने सत्य ही कहा है कि सबकी इच्छाएं पूरी नहीं की जा सकती। मैं नीलू मैडम के आत्मा के शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण किया अर्थात् मौन रहा। मौन रखते हुए मैं अपने आसपास के माहौल को वैज्ञानिक तरीके से जायजा ले रहा था। कहीं कोई देख तो नहीं रहा है। अगर कोई देख लेता तो पूरे क्लास रूम में ठहाके की प्रसाद बाटी जाती है और मुझे पिटाई।

क्लास में लड़कियों के सामने पिटाना एक शर्मनाक प्रक्रिया है। इससे अच्छा तो यही लगता है कि चुल्लू भर पानी में नहाने की सजा दी जाती। कम से कम स्नान का आनंद तो मिलता।

मैं लंच के टाइम का इंतजार करने लगा।

०००० ०००० ००००

तीन घंटे बाद, लंच रूम

प्राची खिलखिला रही थी। मुझे अपने मार्क्स का कोई दुख नहीं था।

‘बधाई हो लव!’ वह पास्ता खाते हुए बोली।

उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी पर मेरे अंदर उसके कम मार्क्स आने दुख था।

उसके लंच बॉक्स में पास्ता और आलू परांठे भी थे। शायद आलू परांठा वह मेरे कहने पर लाई थी जिस पर मेरी नजरें गड़ी हुई थी। मेरे लंच बॉक्स में ब्रेड थे। तीन चीजों पर ही मेरी नजरें बार-बार जाकर ठहर जा रही थी। पहला उसकी काली जुल्फे जो समुंद्र की लहरों की

भांति हवा में उड़ रही थी। बिल्कुल आसमान में काली घटा की तरह। दूसरा इश्क समेटे हुए उसकी बड़ी-बड़ी आंखें जिनमें मैं खुद को ढूंढने का प्रयास कर रहा था। मैं इन नैनो में समाकर प्यार की वादियों में सैर करना चाहता था। अगर मुझे इनकी तारीफ की इजाजत दी जाती तो हर वक्त इसी का नाम होता। तीसरा उसका लंच बॉक्स। पता नहीं उसके लंच बॉक्स में मुझे प्यार की मिठास नजर आती थी जिन्हें मैं अपना लेना चाहता था। मैं एक तरफा आशिक की तरह तड़प रहा था।

‘ओए मिस्टर!’ प्राची की आवाज में मेरा ध्यान भंग किया।

मैं प्राची को निहारने में इस कदर गुम था कि उसके सवाल पर ध्यान ही नहीं दिया।

‘हां हां बोलो मिस...’

‘कहां खोए हो?’

‘कहीं नहीं। बस खयालों में!’

‘बड़ा आजकल खयालों में खोए रहते हो। मेरे तरफ तो तुम्हारा ध्यान ही नहीं रहता।’

अब मैं उसे कैसे बताता कि मैं उसके ही खयालों में खोया था।

‘मैं तुम्हें बधाई दी हूं न मिस्टर!’

‘सॉरी!... फॉर व्हाट?’

‘टेस्ट में फर्स्ट रैंक के लिए।’ वह मेरे भटके मिजाज पर हंस रही थी।

‘मैं बधाई के काबिल नहीं हूं प्राची।’

‘क्यों?’

‘देखी नहीं नीलू मैडम का चेहरा!’

‘ये लोग अक्सर ऐसे ही दिखते हैं। इनके सर पर बोझ होता है।’

‘..और हमारे सर पर कम होता है क्या? दिनभर क्लास में उल्लू की तरह और रात भर सेल्फ स्टडी करने में उल्लू की तरह!’

‘उल्लू की तरह...’ वह हंसी

मैं उसके झुकी नज़रों को निहार रहा था। इन आंखों में आशिक की तरह बस जाना चाहता था। पर वह मेरे दिल की हलचल से अनभिज्ञ थी। मेरे अंदर जो प्यार उमड़ रहा था वह उसमें कहीं दूर तक दिखाई नहीं पड़ रहा था।

‘तुम जानती हो प्राची?’

‘क्या?’ उसकी आवाज में कोई खास उत्साह नहीं था।

मैं प्राची से अपने दिल की बात कह देना चाहता था। मेरे अंदर एक अजीब सा डर पल रहा था कि कहीं वह मेरे इश्क की भावनाओं को इनकार न कर दें। वरना सारी खुशियां एकाएक धूमिल पड़ जाएंगी जो उसके मुस्कुराहटों से मिलता है। उसके बातचित करने से ऐसा लगता है कि वह थोड़े वक्त मेरे साथ गुजार लेती है। जो मेरे अंदर प्यार है वह उसके अंदर नहीं।

‘क्या... मेरे अंदर तुम्हारे लिए इश्क...’

प्राची हंसने लगी और मेरी बातें अधूरी रह गई। इस वक्त मेरे दिल को गहरा

आघात लगा। मुझे दुख तो इस बात का था कि वह मेरी भावनाओं को समझे बगैर ही हंस दी। जैसे उसकी नजरों में मेरे प्यार का कोई मूल्य ही नहीं।

‘लड़के अक्सर इश्क में जल्दीबाजी कर देते हैं और जल्दीबाजी का काम शैतान का। लड़कियां कुछ भी सोच समझकर करती हैं। इसी वजह से लड़के प्रेम रोगी से गम रोगी बन जाते हैं।’ वह मुस्कुराते हुए बोली लेकिन उसके शब्द मुझे कांटो की तरह चुभ रहे थे।

‘प्राची लगता है तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं!’ मैंने भरे स्वर में कहा।

‘लव तुम सही हो सकते हो मगर मैं ऐसा करना नहीं चाहती। तुम्हारे अंदर जो कामयाबी का जुनून है मैं उसे टूटते हुए नहीं देख सकती। मैं चाहती हूं तुम कामयाब बनो। केयर ऑन योर स्टडी।’

मैं प्राची की बातें सुनकर दिखावटी स्माइल दिया। वह मुझे गौर से देख रही थी। शायद मेरे अंदर के इश्क को पढ़ने का कोशिश कर रही हो।

मैं प्राची पर देखे बगैर अपना लंच खत्म करने लगा।

‘तुम क्या बनना चाहते हो आदर्श?’

वह मेरे चुप्पी तोड़ने के लिए पुछी।

‘राइटर।’

‘राइटर!’

‘हां, और तुम?’

‘पता नहीं!’ वह बड़े सरलता से इनकार कर दी।

‘क्यों? पता तो होना चाहिए न?’

मैंने आश्चर्य से पूछा।

‘मैं तुम्हारे जितना टैलेंटेड नहीं हूं न!’ कहकर खिलखिलाने लगी।

‘पढ़ाकू लड़कियां खुद को पढ़ाकू नहीं कहती... खैर कितने घंटे पढ़ती हो?’

‘पता नहीं पर तुमसे कम ही।’

‘मैं नहीं पढ़ता हूं। पर पता नहीं यह सब कैसे हो जाता है? शायद किसी के मेरे जिंदगी में दखल देने से कुछ असर हुआ है।’

‘झूठे हो तुम!’

‘नहीं! मैं सच बोल रहा हूं।’

वार्निंग घंटी ने मुझे चौंकाया।

‘लव मुझे यहां से जाने का मन नहीं कर रहा है।’

‘मुझे भी!’

मैं समझ सकता था कि उससे दूर जाने पर मुझे कितना तड़प होता है। वह अचानक मेरे कंधों पर सिर टिकाकर चिपक गई। मेरे अंदर इश्क की लहरें दौड़ने लगी। मैं इश्क में डूबते जा रहा था। आज पहली बार उसने मुझे गौर से देखा उसकी आंखों में प्यार झलक रहा था जिसे वह छुपाने की कोशिश कर रही थी।

“उसकी आंखों ने मुझे

वफा से सराबोर कर दिया

मेरा दिल तो नादान था
 उसकी अदाओं ने पागल कर दिया।”
 ०००० ०००० ००००

5 माह बाद

(04)

टिचर्स डे फंशन

मैं एजुकेशन ड्रॉप्स के सभी क्लासरूम में भूल भुलैया नजरों से प्राची को ढूँढ रहा था। मन हताहत था और धड़कने पेड़ुलम की भांति धड़क रही थी। करीब 20 मिनट CID अफसर की तरह छानबीन करने के बाद मेरे चेहरे से पसीने निकल रहे थे। जिस तरह फिल्म में हीरो हीरोइन को खोजता हुआ विलेन के घर में कदम रखता है ठीक उसी तरह मैं स्कूल के हर कमरे में कदम रख रहा था। विलेन इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि दूसरे क्लासरूम में जाने के बाद उस क्लास के बच्चे कड़ाई से पूछताछ करते थे। नाम, रोल नंबर से लेकर घर का पता तक पूछ लेते थे। क्लासरूम के छानबीन अभियान खत्म करने के बाद मैं उस स्टेज के पास पहुँचा जहाँ टीचर्स डे सेलिब्रेशन होना था। स्टेज पर महुंगी कुर्सियाँ लगी थी बीच में एक बड़ा सा बैनर लगा था जिस पर ‘टीचर्स डे सेलिब्रेशन’ बेढंगा अक्षरों में लिखा गया था।

नीचे स्टूडेंट्स और उनके पेरेण्ट्स के लिए कुर्सियाँ लगाए गए थे। मैं इस विशालकाय समूह में प्राची को ढूँढ रहा था। दरअसल वह इस सेलिब्रेशन के सिंगिंग कंपटीशन में भाग ले रही थी। मैंने टैलेंट टेस्ट का एग्जाम दिया था जिसका आज विनर लिस्ट और अवार्ड वितरण था।

घर से आते वक्त पापा मुझे कई सपने दिखाए थे। वे चाहते थे कि मैं टैलेंट टेस्ट का विनर बनूँ। मम्मी की भी यही लालसा थी। सपनों से मुझे घेर दिया गया था।

मेरी नजरें प्राची नामक प्राणी को ढूँढते-ढूँढते थक चुकी थी। हाल और हुलिया दोनों बेढंगा हो गया था।

करीब 20 मिनट बाद मेरी नजरें रेड ड्रेस पर जाकर टिकी जो धूप में चमक रहे थे। उसके होठों पर कातिलाना मुस्कुराहट, जिसे देखे बगैर मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वह प्राची थी। मैं उसकी तरफ बढ़ा और उसे क्लासरूम में चलने के लिए बोला। कुछ देर बाद हम बरामदे से होते हुए अपने क्लासरूम में पहुँचे। उसकी जुल्फें खिड़की के तरफ से आ रहे रौशनी से चमक रहे थे। मैं पहली बार उसे हल्के मेकअप में देख रहा था।

मेरे मन में कई सवाल कोलाहल मचाये थे कि कब वह मुझसे कब प्यार करें? कब मेरी हो जाये? पंमेरे जीत के पीछे उसका क्या मकसद है? मुझसे प्यार करती है या मेरे जीत से? मैं उससे प्यार करता हूँ पर वह मेरे जीत से क्यों प्यार करती है?

‘तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया?’

प्राची कि आवाज मेरे माथे में खनकी।

‘क्योंकि मुझे तुमसे कुछ कहना है!’

‘क्या कहना है?’ वह इस वक्त रोमांटिक बिल्कुल नहीं लग रही थी।

‘क्या कहना है...?’ मैं सोचने लगा कि मुझे कहना क्या है?
 ‘हां, क्या कहना है? वह फिर दोहराई। उसके शब्द मुझे कांटे की तरह चुभ रहे थे।
 ‘यू आर लुकिंग सो क्यूट! यही कहना था मुझे।’ मैं बहुत सोचने के बाद मुस्कराकर जवाब दिया।

‘वह तो मैं हूं ही!’
 ‘अच्छा मैंने सुना है तुम सिंगिंग कंपटीशन में भाग ले रही हो?’
 ‘सुना है या मैंने खुद तुम्हें बताई हूं।’
 ‘ओहो माय क्यूट लड़की, शायद तुम ही मुझे बताई हो।’
 ‘क्यूट लड़की...! मैं तुम्हारी लड़की हूं?’
 ‘ओह सॉरी मिस प्राची..’ मैंने दांत निपोरते हुए कहा।
 प्राची भी मुंह छिपाएं हंसने लगी। बातचीत करनेके बाद हम फिर वही चले गए

०००० ०००० ००००

मैं स्टेज के नीचे लगी कुर्सियों पर बैठा था। प्राची गर्ल्स साइड में थी। प्राची कि एक बात मेरे जेहन में बार-बार खनक रहा था-“आदर्श मैं तुम्हें जीत हासिल करते हुए देखना चाहती हूं।” मैं भी सचमुच जीतना चाहता था। पहले टॉप टेन का रैंक फिर उसका दिलाकाश वह कभी कहती कि मैं तुम्हें प्यार करते हुए देखना चाहती हूं। मेरे मन में मजाकिया अंदाज सुझा और अचानक लबों पर मुस्कराहट बिखर गई।

अब मैं स्टेज के तरफ आंख गड़ाए देख रहा था क्योंकि अब टॉप टेन विनर का नाम सुनाया जाने वाला था। मैं जिज्ञासा से एंकर की तरफ देख रहा था। प्राची के तरफ से देखा तो वह मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी। उसकी आंखें खूबसूरती के साथ चमक रहे थे जिनमें मुझे कुछ सपना नजर आ रहा थे।

इस वक्त मुझे पापा की कही बातें प्रतिध्वनि की तरह गूंज रही थी- “बेटा जब टैलेंट टेस्ट का विनर चुने जाओगे तब मैं ऑडियंस के पीछे खड़ा रो रहा होऊंगा। यह आंसू जीत की होगी। जब तुम सम्मानित होते हुए जीत का आंसू देखना चाहोगे तब पीछे नजरें दौड़ा लेना।” पापा का यह सपना पूरा होते हुए देखने के लिए मैं मंच की तरफ कुछ भरोसा लगाए देख रहा था।

तभी एंकर की आवाज एकाएक गूंज उठी और हॉल तालियों से गूंज उठा।

“टैलेंट टेस्ट फर्स्ट प्राइज गोज टू मिस्टर लव पांडे 8th क्लास। एंकर अंग्रेजी में नाम पढ़कर मुस्कराया”

मुझे एंकर की बातों पर अभी भी भरोसा नहीं हो रहा था। मैंने एक बार फिर प्राची की तरफ देखा। वह पागलों की तरह मुस्कुरा रही थी। उसके आंखों में खुशी के सजल आंसू थे। मैं अब भी सहमे बैठा था। एंकर भीड़ में फर्स्ट प्राइज विनर को देखना चाह रहा था। सबकी आंखें विनर को ढूंढ रही थी।

‘लव भाई चुपचाप क्यों बैठे हो? तुम्हारा सपना इंतजार कर रहा है। जाओ! गरदा उड़ा के आना।’ विकास मेरा पीठ थपथपाते हुए बोला।

पीयूष भी मेरे बगल वाली कुर्सी पर बैठा सजल आंखों से मुस्कुरा रहा था। पीयूष

और विकास दोनों में से गहरे मित्र थे। और अक्सर हम साथ-साथ पाए जाते थे।

‘मुझे भी तुमसे यही उम्मीद थी।’ पीयूष नम आंखें पोछते हुए बोला।

मैं अपनी कुर्सी से उठा। तालियों की गड़गड़ाहट से मेरा मन खिल उठा। मैं भी यही चाहता था कि मेरे नाम पर भी तालियां बजे। हर किसी की निगाहें मुझे ढूंढ रही थी। मेरे मेहनत और वक्त ने साथ दिया। एक बार फिर प्राची की तरफ देखा। वह सजल आंखों में मुस्कुराहट लिए तालियां बजा रही थी। उसकी आंखों का सपना अब हकीकत में बदल गया था।

मैं स्टेज पर पहुंचा। मेरा भव्य स्वागत किया गया। फूल की माला, सम्मान पत्र, अवार्ड से मुझे नवाजा गया। इस वक्त मुझे ऐसा एहसास हो रहा था कि मैं कितना सम्मानित हूं!

एंकर द्वारा मुझे दो शब्द बोलने का आग्रह किया गया। उसने मुझसे पूछा कि मैं इस सफलता के बारे में कुछ बोलूं।

मैंने कुछ इस तरह से शुरू किया- ‘मेरे सफलता का रहस्य मेरे माता पिता और मोटिवेशनल गर्ल प्राची को जाता है। प्राची हर वक्त मुझे कामयाब होते हुए देखना चाहती है। मुझे फक्र है कि मेरे माता-पिता मुझसे भरोसा करते हैं और मैं उनका भरोसा बनाए रखता हूं। शुक्रिया! थैंक यू ऑल!’

मैंने सबसे पीछे देखा। पापा सजल आंखों से मुस्कुरा रहे थे। सचमुच दर्शकों में वे सबसे खुश थे।

कितनी खुशी होती है, जब एक बाप अपने बेटे को अपनी आंखों के सामने सम्मानित होते हुए देखता है! यह मेरे लिए गर्व की बात थी। मुझे अपने जीत पर नहीं बल्कि उनके खुशी पर गर्व हो रहा था। ना जाने कितने आंखों में मैंने आंसू ला दिए!

प्राची अब और खुश थी। वह मुझे एकटक निहार रही थी। उसके आंखों में सजल आंसू थे। शायद मेरे जीत से उसके उम्मीद पर चमक बिखर गया हो। स्टेज के नीचे उतरते हुए मैंने देखा, सभी दोस्तों के चेहरे खिल रहे थे। सब अचानक मुझे घेरने लगे। मैं इस इरिटेटिंग लम्हें से पिछा छुड़ाने के लिए वहां से दूर चला गया। फिर भी भिड़ मेरे पिछे चलने लगी।

०००० ०००० ००००

क्लासरूम में आकर दोस्तों के साथ गप्पे लड़ा रहा था। कितनी बेतुकी बातें हो रही थी! शादी से लेकर हनिमून तक। लड़कों के झुंड में यही सब होता है और इनलोगो को जवाब देते हुए मैं तंग आ गया था। मैं तो सिर पकड़े हुए बैठा था।

‘अरे यार इतनी क्युट लड़की है! शादी करने में क्या जाता है?’ पीयूष ऐसे बोल रहा था जैसे रोमांटिक डायलॉग बोलने की कोशिश कर रहा हो।

‘पढ़ ले बच्चा, उमर पड़ी है।’ मैंने इरिटेटिंग अंदाज में कहा।

‘अरे भाई! किसकी उमर पड़ी है? पढ़ने की या शादी करने की? विकास बीच में टपक पड़ा।

'तुमदोनो डिसाइड करो।तबतक मै पहुंच रहा हूं।' मैं कहते-कहते वहाँ से स्टेज की तरफ भागा।

'अरे कहाँ चल दिया? सुनो तो!' पियुष चिल्लाया।

'तबतक तुम दोनों एक-दूसरे का सुनो।' मैं भागते हुए कहते जा रहा था।

मुझे प्राची का गाना सुनाई दे रहा था। बिल्कुल धिमि-धिमि आवाज,ऐसा लग रहा था जैसे वो मेरे कानों में गा रही हो। मै बेताबी से दौड़ रहा था। पियुष और विकास भी मेरे पिछे दौड़े थे।

प्राची के गाने से पुरा फंशन संगीतमय हो गया था। जितनी खूबसूरत वह थी उससे भी खूबसूरत गाना गा रही थी।

“जिंदगी में तो सभी प्यार किया करते हैं।”

वह आंखें बंद करके गाए जा रही थी।उसके लय में जादू था जो मुझे अपने आगोश में खींच रहा था। उसके लहराते रेशमी जुल्फों पर लाइट रंगीन अदाकारी दिखा रहे थे। गाना खत्म होते ही पुरा हॉल तालियों की गूंज में तब्दील हो गया। सबके चेहरे पर स्माइल वाली खुशी थी।

मैं सिकुड़न महसूस कर रहा था। प्राची के वाहवाही के आगे मेरा जीत फिका लग रहा था।वह सबका दिल जीत चुकी पर मैं अपने जीत से किसी का दिल नहीं जीत सका। मेरे जीत से लोग आश्चर्यचकित तो थे पर अंतरात्मा से खुश नहीं थे। मै दिखावटी स्माइल दे रहा था पर मेरे अंदर प्राची के प्रति था। यह जलन मेरे और उसके जीत में अंतर से था।

वाहवाही लूटकर वह सिट पर आ गई। उसके मम्मी-पापा उसके साथ बैठे थे और सजल आंखों से मुस्कुरा रहे थे।उसके पैरेंट्स को देखकर मुझे अपने पैरेंट्स की याद आ गई।सबको पुरा उम्मीद था और मुझे भी कि प्राची ही विनर चुनी जाएगी और ऐसा हुआ भी। मैं भी उम्मीद के साथ एंकर के तरफ देख रहा था।

उसके हाथों में अवार्ड देखकर मेरे अंदर ईर्ष्या उत्पन्न हो गई। मैं यह भूल गया था कि कहीं न कहीं मैं उससे प्यार करता हूं। प्रिंसिपल और अतिथियों द्वारा उसे सम्मानित किया गया। उसके सम्मान के आगे मेरा सम्मान फिका लग रहा था। अतिथियों के साथ वह हांथ मिला रही थी। मैं गैर से हांथ मिलाते नहीं देख सकता था।आंखें बंद कर लेना चाहता था पर ऐसा कर नहीं सका। मेरे अंदर एक अजीब सी घुटन थी। मुझे उसका जीत बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था।फंशन शुरू होने से पहले उसे जीतते हुए देखना चाहता था पर अब यह जीत हीं मेरे अंदर ईर्ष्या का कारण है। मेरा मन इस भिड़ से दूर जाने की इजाजत दे रहा था। यह भिड़ मुझे दर्द दे रहा था और मैं इस दर्द को सहन नहीं कर सकता था।

जैसे ही मैं वहां से जाने लगा,मेरे पिछे से एक आवाज आई।

'लव तुम कहां जा रहे हो?'

मै पिछे मुड़ा,पियुष था। बिना कुछ जवाब दिए आगे बढ़ गया।

मै गलियारे में लगे बेंच पर बैठकर सोचता रहा। यहां उस बेदर्द भिड़ से मुझे शांति मिल रही थी। पास से गुजर रहे लड़के मुझे घूर रहे थे। शायद वे मुझसे कहना चाह रहे होंगे कि वहां फंशन मनाया जा रहा है और मैं यहां गुमसुम क्यों हूं? यहां बैठे बैठे आधा घंटे हो गये थे।मै खुद से बोरे हो रहा था।

पियुष दौड़ते हुए मेरे तरफ आया। मैंने ध्यान नहीं दिया पर उसके चलने के अंदाज से मालुम चल गया।

'क्या कर रहे हो यहाँ?' वह आश्चर्य से पूछा। मैं अब भी जमीन पर निगाहें टिकाये रहा। उसने बायां हाथ मेरे कंधे पर रखा।

'कुछ नहीं! बैठा हूँ।' मैंने झुकी नज़रों से कहा। मेरे आवाज में उत्सुकता नहीं थी।

'मैं ये पुछ रहा हूँ कि तुम यहां अकेला क्या कर रहे हो? पियुष कुछ देर तक मुझे देखता रहा। मैं उसे नजरंदाज कर रहा था। हालांकि मुझे उससे कोई शिकायत नहीं है।

'चलो मेरे साथ।' पियुष मेरा हाथ पकड़कर ले जाना चाहा।

'कहाँ?'

'फंशन में और कहां!'

'प्लिज मुझे यहीं रहने दो।' मैंने उससे हाथ छुड़ा लिया।

'आखिर क्यों? नाराज हो मुझसे?'

'नहीं! मुझे वहां अच्छा नहीं लग रहा है।'

'वही तो मैं पुछ रहा हूँ,क्यों?'

'देखो पियुष मुझे वहां अच्छा नहीं लग रहा है। भिड़ से नफरत हो रहा है।' मैंने स्पष्ट शब्दों में कहा।

'नाराज हो!प्राची से?'

'नहीं!' लेकिन मेरे कहने के अंदाज़ में हाँ था।

'तो मैं जाऊँ?'

'हां तुम जाओ।' मैंने नजरअंदाज वाले भाव में कहा।

वो जाने लगा।मैंने इस बार सिर उठाकर देखा वह जिद्द से चले जा रहा था।जाते वक्त पिछे मुड़कर भी नहीं देखा। शायद वह मुझपर गुस्सा हो गया।

'कितना बेवकूफ हूँ मैं ! कोई मनाने आता है तो भी रूठ जाता हूँ मैं।' मैं खुद पर हँसा।

०००० ०००० ००००

कुछ देर बाद।

प्राची मेरे तरफ आ रही थी। यह मुझे तब आभाष हुआ जब दूर से उसे गलीयारे में आते देखा।मैं चुपचाप मुंह लटकाए बैठा रहा।

'लव तुम कब आये?' वह सामान्य अंदाज में मुस्करा रही थी।

'बस थोड़ी देर पहले!' मैंने उदास चेहरे पर बनावटी मुस्कुराहट लाते हुए बोला।

'ऐसे अकेले में क्यूं बैठे हो?' कहते हुए वह मेरे पास बैठी।

'कोई नहीं है न मेरे साथ बैठने वाला इसलिए!' मैं यहां से दूर चला जाना चाहता था पर चाहकर भी नहीं जा पाया।

जवाब में वह सिर्फ मुस्कुराई।मैं भी जबरदस्ती मुस्कुरा रहा था।

'मुझे बहुत अच्छा लगा मिस्टर जब तुम कम्पटिशन विनर चुने गए।मैं तो खुशी

से पागल हो रही थी।' वह उत्सुकता से बोली।

'मैंने तो सिर्फ जीत हासिल किया। असली विनर तो तुम हो।'

'क्यों, क्यों मिस्टर?' वह कुछ उलझी हुई दिख रही थी।

'क्योंकि तुमने तो सबका दिल जीत लिया।'

'मैं नहीं!, तुम जीते हो सबका दिल।' वह अपना जीत मुझपर थोपते हुए बोली।

'यह मुझे उस वक्त लगा जब तुम बड़े-बड़े लोगों से हांथे मिला रही थी।' मैंने भर्राई आवाज में कहा।

मेरी आवाज कहीं ना कहीं प्राची को मेरा अकेलापन और नाराजगी समझाने के लिए बाध्य कर रहा था। मैं बनावटी मुस्कुराहटों में मुस्करा रहा था लेकिन मेरे अंदर पहाड़ सा टूट रहा था।

'देखो लव ऐसे सोसायटी में ये सब आम बात है।'

'मुझे गर्व महसूस हुआ। कितने बड़े बड़े लोगों से हांथ मिलाती हो!'

'तो तुम्हे इसी बात से नाराजगी है।' वह मेरे आंखों में देखते हुए बोली।

कुछ देर तक मैं उसे देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। वह अजीब निगाहों से मुझे निहार रही थी। ये निगाहें मेरे प्रति उसका प्यार जाहिर कर रहे थे।

'अच्छा ये बताओ की पार्टी कब दे रही हो? मैं खामोशी को मुस्कुराहट में तब्दिल करते हुए पुछा।

'किस चिज की!' वह आश्चर्य से मुझे घूरते हुए बोली।

'तुम्हारे जीत की!'

'ओहो! तुम भी तो टैलेंट टेस्ट जीते हो!'

'मेरा जीत उतना मायने नहीं रखता जितना तुम्हारा।'

'मेरे लिए तुम्हारी जीत ही मायने रखती है।'

'लेकिन मेरे लिए तुम्हारा प्राची। मैं तुम्हारे आवाज का फैन जो हो गया हूं। तुम सबका दिल जीत लेती हो और मैं सिर्फ उम्मीद।'

वह अपने आगे के घुंघराले जुल्फों को ठिक करते हुए मेरे तरफ देख रही थी। मैं उसमें डूबा जा रहा था।

'तो दिल बड़ा होता है या उम्मीद?'

वह मेरे कलाई पर अपना हाथ फेरते हुए बोली।

'दिल!'

'तो तुम्हे पार्टी चाहिए।' वह फिर दोहराई।

'क्यों नहीं! तुम्हे कोई शक?'

'तो कहां पार्टी लेना चाहते हो?'

'उमेश स्विट्स और वो भी तुम्हारे हाथों से खाने का जी कर रहा है।' वह मेरे नटखटपन पर हंस रही थी।

'हाऊ रोमांटिक मिस्टर यू आर! पर मेरे हाथों से ही क्यों खाना चाहते हो?'

'क्योंकि तुम्हारे हाथों से खाना मुझे अच्छा लगता है।'

'ठिक है पर कितना बजे?' वह पुछी

'पाँच बजे।और हां इसबार कंजूसी नहीं चलेगा।'
हम दोनों साथ-साथ उठे।

०००० ०००० ००००

(05)

Umesh sweets, ara road, 5pm

'मुझे तो ऐसा लग रहा था कि तुम आओगी ही नहीं!' मैं प्राची के तरफ रोमांटिक अंदाज में देखते हुए बोला।

हम दोनों उमेश स्वीट्स के स्मार्ट क्लास में बैठे थे।

'तुम्हें कैसे पता?'

वह आंखों पर दस्तक दे रहे जुल्फों को बेदखल कर रही थी।

'मुझे पता है तुम लड़कों को कितना वैल्यू देती हो।'

'तो तुम अपनी तुलना अन्य लड़कों से कर रहे हो...कितना कुछ सोचते हो।' वह मजाकिया अंदाज में कहते हुए मुस्करा रही थी।

'वैसे इस ड्रेस में खुबसूरत दिख रही हो।' वह पिंक कलर के मॉडर्न सूट में थी,जिसपर रेड कलर के धब्बे मेरे हिसाब से अवैध कब्जा किए थे।

'थैंक यू!' वह जवाब में बोली।

हमदोनों कुछ देर तक एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते रहे।वेटर हमारे ऑर्डर के हिसाब से काला जामुन(एक प्रार का मिठाई) परोस गया।

'मेरे तारिफ में भी तो कुछ बोलो!' मैंने कहा

'तुम तो खुद स्मार्ट हो, तुम्हारा क्या तारिफ करू!'

वह जवाब देकर मुस्करा रही थी।ये तारिफ के शब्द नहीं लग रहे थे। मैंने रिप्लाई में थैंक्यू नहीं कहा। मुझे पता था कि ये तारिफदारी के नहीं बल्कि जबरदस्ती बोले जाने वाले शब्द थे।

'प्राची तुम्हारे लिए मेरे दिल में कुछ बातें हैं।' मैं कोई खाश उत्साहित होकर नहीं बोला था।यह सोचकर कि पता नहीं उसका क्या रिएक्सन होगा।

'जो भी हो लव तुम उसे इजहार मत करना।' वह स्पष्ट शब्दों में बोली।

मुझे एकाएक धक्का-सा लगा।अंदर ही अंदर व्याकुल हो उठा। मेरे लब्ज अब उदास हो रहे थे।वह मेरे प्रपोजल को इजहार से पहले ही इनकार कर रही थी। मैं एकाएक खामोश हो गया।

'मैं चाहती हूं कि तुम इस प्यार और दिल के कनेक्शन से दूर ही रहो। तुम्हारे अंदर जो टैलेंट है, उसपर फोकस करो।'

'प्राची तुम चाहती क्या हो?'

'मैं चाहती हूं कि तुम कामयाब इंसान बनो।प्यार कि उम्र तो दशकों बाकी है।'

मेरे अंदर जो दिल कि बातें थी वो दिल में ही छुपी रह गईं। मैं अब चाहकर भी अब उसे कहना नहीं चाह रहा था।

‘प्राची जब तुम कह रही हो तब मैं कामयाब होकर दिखाऊंगा।’

‘आदर्श मैं ये नहीं कह रही हूँ कि मैं तुमसे प्यार नहीं करती। मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ.... लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम आत्मनिर्भर बनो... कामयाब बनो! तुम्हारे अंदर बहुत टैलेंट है।’

मैं प्राची को गौर से देख रहा था। गौर से देख रहा था क्योंकि वह इस वक्त बदली बदली सी लग रही थी। ना जाने क्या हो गया था इस वक्त अपने प्यार को छोड़कर कामयाबी बात कर रही है। मैं उससे बहुत कुछ कहना चाहता था। मेरा दिल आज वह सबकुछ कहना चाहता था जो कई महीनों से दिल के अंदर पड़ा था।

मैं उससे कहना चाहता था कि उसके बिना यह दिल तड़पता है। उसके बिना मैं खुद को हर पल भारी महसूस करता हूँ मेरी नजरें उसे हर जगह ढूँढती हैं। उसका आवाज मेरा दिल अपने पास सुनना चाहता है। जब से उसने देखा हूँ मेरा दिल कुछ बेकरार सा रहता है। मेरे आँखों का तलाश मिट जाता है जब वह नजरों के सामने होती है। मेरा वह पल सबसे खुशनसीब होता है जिस पल वह मेरे साथ होती है।

मैं यह सोच रहा था कि जिसे मैं प्यार करता हूँ उसे मेरी कोई कदर ही नहीं है। वह मुझे मुस्कुराते देख बोली- ‘व्हाट हैप्पेंड? तुम इतना हंस क्यों रहे हो?’ वह मुझे घूरते हुए बोली।

‘कुछ नहीं... बस अपने बेवकूफियों पर हंस रहा हूँ।’

‘ऐसा क्या किया तुमने?’

‘बस ... जो दिल में आये कह देता हूँ।’

‘तो इसमें बुरा क्या है?’

‘प्राची कभी-कभी इन बातों का कोई मूल्य नहीं रहा जाता।’
हम कुछ देर तक एक दूसरे को देखते रहे।

‘अच्छा यह बताओ तुम भविष्य में क्या करना चाहते हो?’ प्राची मुझसे पुछी।

‘आशिक बनना चाहता हूँ तुम्हारा।’ मैं हंसते हुए बोला।

‘बड़े फनी हो तुम!’

‘मेरा छोड़ो... तुम अपना बताओ तुम क्या बनना चाहती हो?’

‘तुम्हारे तरह राइटर तो नहीं बन सकती!’

‘...तो क्या सिंगर बनोगी?’

‘मैं बैंकर... बैंक अधिकारी होना चाहती हूँ।’

‘अच्छी सोच है लोगों की भीड़ पसंद है।’

‘मिस्टर लव... बैंकर लोगों की भीड़ नहीं, बल्कि लोगों की भीड़ तुम्हारे लिए है।
वह तुम्हारी सहायता के लिए आते हैं।’

‘हां वही बस मेरा नजरिया बदल गया है। पता नहीं मैं इतना कहां खो गया हूँ।’

‘कंट्रोल योर माइंड लव..!’

‘कोशिश तो कर रहा हूँ पर पता नहीं क्यों मेरे साथ ऐसा हो रहा है।’

‘क्या हो रहा है?’ वह आश्चर्य से बोली।

‘तुम नहीं समझ सकती!’ मैं माथा ठोकते हुए बोला।

वह जवाब में कुछ नहीं बोली बस मुझे घूरकर देखते रही।
‘लव तुम ऐसे कब से बातें करने लगे हो?’
‘पता नहीं तुम तो मेरे साथ ही हो न!’
‘मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है...तुम कहना क्या चाहते हो?’
प्राची अब परेशान से नजर आ रही थी मैं उसके परेशानी को देखकर कातिलाना अंदाज में मुस्कुरा रहा था।
‘कुछ नहीं बस इतना ही कहना चाहता हूं कि तुम इसी तरह मुस्कुराते रहो!’
वह चुपचाप मुझे देखती रही।
‘तुम जानती हो प्राची मैं इस पार्टी के बदले अपने तरफ से पार्टी दूंगा।’
‘क्यों?’ वह बोली।
‘मैं भी कंपटीशन जीता हूं न!’
‘ओ! वाओ!’ वह खुशी से उछली।
‘क्वालिटी स्वीट्स... शाम 4: 00 बजे..’
‘क्या खास होगा उसमें?’
‘बस कुछ नहीं इसमें कुछ मीठा था इसमें कुछ तिखा होगा।’
दरअसल मैं उसके इस तिखे इज़हार के बदले उसे तीखा खिलाना चाहता था शायद उस घमंडी को तीखा ही पसंद हो।
‘तुम आओगे न?’ मैं मुस्कुराते हुए बोला
‘हां...’ वह पुरे विश्वास के साथ नहीं बोल रही थी

०००० ०००० ०००० ००००

Quality sweets...4:00 pm

मैं करीब आधे घंटे पहले से उसका इंतजार कर रहा था और यकीन के साथ नहीं कह सकता था कि वह आएगी हीं। उसके मन में कुछ संकोच था और वह पुरे विश्वास के साथ नहीं बोल रही थी। शायद उसे मेरे प्यार में कुछ गलतफहमी हो गया हो पर मैं वहीं उसका पुराना मिस्टर रोमांटिक हूं। मेरे दिल में वही बातें अभी भी कोलाहल मचाती हैं। लेकिन उसने मेरा विश्वास नहीं बल्कि सपना भी तोड़ डाला। कितने ख्वाब देख रहा था मैं! सबके सब धूमिल पड़ गए थे।

मैंने बाहर देखा तभी मेरी नजरें प्राची पर पड़ी। वह गोल्डन सूट में थी जिस पर लाल लाल छिटें सुरज की लालिमा जैसे आकर्षक दिख रहे थे।

‘हाय!’ वह मुस्कुराते हुए बोली।

‘हाय ..! मैंने जवाब में बोला।

हम अंदर जाकर आमने-सामने की सीट पर बैठे। बीच में एक टेबल था जो हमारी दूरियों को बढ़ा रहा था लेकिन हमें निगाहें मिलाने में कोई तकलीफ नहीं थी। वेटर हमारे लिए मेनू लेकर आया। मैंने पिज़्ज़ा आर्डर किया।

‘पढ़ रही हो आजकल पढ़ाकू लड़की?’ मैंने खिलखिलाते हुए प्राची से पूछा

‘क्यों फेल होना है...?’ वह मुस्कुराते हुए बोली।
तब तक वेटर हमारे ऑर्डर का सामान रख गया।
‘स्टार्ट करो...’ मैंने प्राची से कहा।
वह मुस्कुराते हुए सिर्फ मुझे देख रही थी
‘तुम पार्टी दे रहे हो ...पहले तुम स्टार्ट करो।’
‘भूल गई हो?’
‘क्या?’ वह आश्चर्य से बोली।
‘...तुम्हारी पार्टी मैंने स्टार्ट की थी...’
‘ओहो!’ कहते हुए वह उछली।
‘आई स्टार्टेड..’ वह प्लेट में हाथ लगाकर उदघाटन करते हुए बोली।
‘पता है मैं तुम्हारा कब से इंतजार कर रहा था?’
‘कब से?’
‘तुम्हारे आने के आधा घंटा पहले से!’
‘कौन सा बड़ा काम कर दिए हो। लड़कियों का इंतजार तो हर कोई करता है।’
‘इसीलिए लड़के पीछे पड़कर भी नौकरी कर लेते हैं और की लड़कियां गर्व से हाउसवाइफ बनती है।’
‘समझते नहीं हो यार हम वह करते हैं जो तुम संभाल ही नहीं सकते।’
‘सही कह रही हो।’ मैं सहमति से बोला।
हम कुछ देर तक चुपचाप एक दूसरे को देखते रहे उसके खाने का स्पीड मुझसे तेज था।
‘यहां से जाने के बाद क्या करोगी?’ मैं उसके चुप्पी को तोड़ने के लिए पुछ डाला।
‘पढ़ूंगी और क्या?’
‘मैं इतना कभी नहीं पढ़ता हूं! बस नोट्स का दर्शन कर लिया उतना ही काफी है।’
‘तो हर बार टेस्ट में फर्स्ट कैसे आते हो?’
‘पता नहीं मैं खुद चकित रहता हूं!’
‘झूठे कहीं के!’
‘झूठे??’
‘हां झूठ बोलने वाला।’ वह ऐसे समझा रही थी जैसे मैं कोई ना समझ हूं।
‘अच्छा अब समझा...’
‘सच-सच बताओ कितने घंटे पढ़ाई करते हो?’
‘दिनभर पागलों की तरह क्लास में बैठा रहता हूं... तुम तो देखती हो...और रात में 3 घंटे पढ़ लेता हूं।’
‘झूठ ! सफेद झूठ!’
‘सच! सफेद सच!’ मैंने प्रतिउत्तर में कहा।
‘तुम कुछ और लोगी?’ मैंने प्राची से पूछा।
‘नहीं इतना ही काफी है।’
‘बस इतना ही खाती हो?’

‘मैं तुम्हें भुखु दिखती हूं?’

‘तुम तो मुझे ऐसा भी नहीं दिखती हो जैसा मैंने सोचा था।’

‘क्या मतलब?’ वह आश्चर्य से मेरी तरफ देखते हुए बोली।

‘कुछ नहीं!....मतलब मैं एक कामयाब बनूंगा.... प्यार नहीं करूंगा!..किसी से भी नहीं तुमसे भी नहीं....’

‘प्यार तो तुम करना ही नहीं। मुझसे तो बिल्कुल नहीं! प्यार की नजरों से देखना भी नहीं।’

‘क्यों?’ मैंने आश्चर्य से पूछा

‘क्योंकि मैं तुम्हें कामयाब देखना चाहती हूं। तुम्हारे अंदर जोर टैलेंट है, मैं उसे प्यार में धूमिल नहीं कर सकती।’

प्राची इस वक्त संकोच से बोल रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसकी आंखें न जाने कब सजल हो जाएंगी। मैं महसूस कर सकता था कि उसके दिल में भी मेरे लिए जगह है। वह मुझसे बात करते हुए खुश रहती है। पर ना जाने क्यों इस खामोशी को सह रही है।

‘क्या वह सचमुच मुझे कामयाब होते हुए देखना चाहती है?’ मैं फुसफुसाते हुए बोला। लेकिन यह बात मुझे पूछने की हिम्मत नहीं हो पाया।

‘प्राची हर कामयाब इंसान प्यार के दौर से गुजरा होता है।’ मैंने कहा।

‘ऐसा जरूरी नहीं!’

‘तुम विश्वास से कैसे कह सकती हो?’

‘मैं तुम्हारे अंदर उमड़ रही भावनाओं को समझती हूं...तुम कुछ भी करते हो पूरे दिल से करते हो! तुम प्यार में डूब जाओगे फिर इसके अलावा तुम इससे अलग भी नहीं हो पाओगे।’

‘तुम ऐसा कैसे कह सकती हो। जिंदगी में पढ़ाई के साथ प्यार भी जरूरी है प्यार में इतना तो नहीं डूब जाऊंगा!’

‘तुम डूब जाओगे फिर इससे दूर नहीं हो पाओगे और तुम्हारे अंदर टैलेंट जो अभी है, वह नहीं रह जाएगा।’

‘कुछ भी हो मैं तुम्हारे अलावा किसी और लड़की के बारे में सोच भी नहीं सकता हू।’

‘लव तुम अपने टैलेंट से प्यार करो मुझसे नहीं!..मैं तुमसे तब प्यार करूंगी जब तुम कामयाब होने लगोगे।’

‘प्राची तुम मुझे लंबी जुदाई दे रही हो।’

‘मिस्टर...रोमांटिक! कामयाब होने के लिए कुछ प्यारे रिश्ते से दूर जाना होता है।’

‘तुम मुझसे कोई बहुत बड़ी रकम नहीं ले रही हो प्राची?’

‘लव तुम इतना ज्यादा क्यों सोचते हो?’

‘पता नहीं!’ मैं खोए-खोए उत्तर दिया।

‘क्या हो गया है तुम्हें?’

‘मुझे खुद पता नहीं!’

मैं खुद में कहीं गुम था। वह मेरे हालत को देख रही थी। कुछ देर तक मुझे ध्यान

से देखती रही।

खाना खाने के बाद हम होटल से बाहर निकले। वह अपने सीने से लगा ली और मेरे माथे को चूम ली। मुझे प्यार का सुखद एहसास हुआ। मैं चाहता था कि प्राची इसी तरह मुझसे प्यार करती रहे। जाते वक्त मेरे लबों पर कातिलाना मुस्कराहट थी। ऐसा लग रहा था जैसे मैं प्राची के प्यार की फुहार भिग रहा हूँ। उसके इश्क की लहरें मेरे रोम रोम में दौड़ रही थीं। मैं दुआ कर रहा था कि काश ये वक्त यूँ ही ठहर जाए पर कुछ ही पल में वह मेरे आँखों से ओझल हो चुकी थी।

(06)

कुछ दिनों बाद.....

कुछ दिनों पहले से ही पूरे स्कूल के स्टूडेंट्स को मालूम हो गया था की डायरेक्टर सर और प्रिंसिपल सर के बीच तनातनी हुई है और इसका परिणाम क्या होगा हम सभी इससे वाकिफ नहीं थे। कुछ दिन से हम लोगों को यह मालूम चल रहा था कि स्कूल का बटवारा होगा और यह दो भागों में बट जाएगा।

आज सुबह क्लास रूम में इमरजेंसी नोटिस सुनाया गया।

“बड़े हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि इस शैक्षणिक केंद्र के दो भाग खुल रहे हैं। एजुकेशन ड्रॉप्स यही रहेगा और दूसरा केंद्र न्यूटन इंटरनेशनल स्कूल, पानी टंकी रोड में अवस्थित होगा। छात्र अपने रुचि के अनुसार अपना एडमिशन इन विद्यालयों में अपनी इच्छा से करवा सकते हैं। इस संबंध में हमारे द्वारा कोई बाध्यता नहीं है।”

अगर इस नोटिस से सबसे ज्यादा दुख जिसे हो रहा था वह मैं था। मुझे डर था कि कहीं प्राची के पेरेंट्स उसका एडमिशन न्यूटन इंटरनेशनल में न करवा दें। अगर ऐसा हुआ तो वह मेरी नजरों से दूर हो जाएगी। मैं चाहता था कि वह हर वक्त मेरे पास रहे।

पर वक्त को कुछ और ही मंजूर हुआ। मैं एजुकेशन ड्रॉप्स में रह गया और प्राची न्यूटन इंटरनेशनल में चली गई। जिस तनहाइयों से मैं डरता रहा वहीं तनहाइयां अब मेरे साथ थी। आखिरकार मैं इन्हीं तनहाइयों को अपनाकर उसे ढूंढने सफर में निकल पड़ा। वह सफर जिसका मंजिल तो मालूम था पर रास्ते नहीं। उसे मुझसे दूर होने का बस खेद होगा पर मैं उसके लिए तड़प रहा था। जहां कहीं भी उसका पता लगता मैं पागलों की तरह दौड़ पड़ता।

नोटिस को सुनने के बाद हम सब बहुत परेशान थे। एक दूसरे से पूछा करते थे कि तुम किसमें पढ़ोगे?.... तुम किसने पढ़ोगे?

लंच बाद विकास मुझसे पूछा-‘लव तुम किसमें पढ़ोगे?’

‘पता नहीं!’ दरअसल मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था।

‘क्यों? तुम्हारा डिसीजन क्या है?’

‘पता नहीं यार!’

‘पीयूष तुम किस में पढ़ोगे?’ वह यही सवाल पीयूष से पूछा।

‘पता नहीं मैं पापा से पूछ कर बताऊंगा!’ वह बहुत देर सोचने के बाद जवाब दिया। हम सब उसके बातों पर हंस रहे थे क्योंकि इसका डिसीजन अपने पापा से लेने वाला था।

‘पढ़ना तुम्हें है और डिसीजन तुम्हारे पापा लेंगे?’

‘क्यों! मैं खुद से कह दूंगा तो हो जाएगा?’

‘क्यों नहीं! तुम डिसीजन ले कर तो देखो!’ मैंने व्यंगात्मक अंदाज में कहा।

‘फिलहाल इसी में पढ़ूंगा।’ वह संकोचवश बोल रहा था।

‘बाद में बदलोगे का?’ विकास बोला।

‘इसका क्या भरोसा है!’

‘फाइनली मैं इसी में पढ़ूंगा..’ वह सकपककर बोल रहा था और आपने जवाब से कंप्यूज था। हम दोनों सिर्फ मजाक में पूछ रहे थे और वह इस बात को सीरियस ले रहा था।

‘इतना छोटा डिजीजन लेने में इतना देर कर रहे हो तब तो शादी करने में बुढ़ापा ला हीं दोगे!’ मैंने कहा।

हम दोनों हंस रहे थे। उसे भली-भांति मालूम था कि हम दोनों उसकी चुटकी ले रहे हैं। वह भी बेहयात मुस्कुराहट के साथ मुस्कुराया।

०००० ०००० ०००० ००००

लंच रूम।

मैं बेसब्री से लंच रूम में प्राची का इंतजार कर रहा था। कुछ देर बाद आई और मेरे पास आकर बैठ गई। वह भी मेरी तरह चिंतित दिख रही थी।

‘तुम किस में पढ़ोगी?’ मैंने उससे पूछा।

‘मिस्टर मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।’

‘तुम पढ़ना किस में चाहती हो?’

‘इसी में शायद... और तुम?’

‘इसी में शायद!... क्यों तुम्हें क्या पसंद है?’ मैं शब्दों पर जोर डालते हुए बोला।

‘पापा जो बोलेंगे वही मैं करूंगी।’

‘यार हमारे देश में गजब की परंपरा है। जो बड़े कहे वही करना है। और हम भी उन्हीं पर टिके रहते हैं। हम खुद का अपना रास्ता और किसी जनों से शेयर नहीं कर सकते हैं।’

‘मिस्टर तुम किस में पढ़ोगे?’

‘इसी में!... एजुकेशन डॉप्स में!’

‘ओ! तुम पूरे विश्वास से कह रहे हो!’

‘हां!’ मैं पूरे सहमति से बोला।

‘और हां मिस! तुम भी इसी में पढ़ाना। तुम जब चली जाओगी तो मैं कैसे पढ़ पाऊंगा?... नहीं पढ़ पाऊंगा मैं...’

मैंने दुखी आवाज में कहा।

‘क्यों?’

‘तुम नहीं रहोगी तो मुझे कौन कहेगा कि मैं कामयाब हो जाऊंगा। तुम्हारी ये बातें मुझे संघर्ष से जुड़ने की ताकत देता है प्राची। मुझे ये बातें मेरे मन में तुम्हारे अलावा कोई और नहीं डाल सकता।’

‘अगर ऐसा हुआ तो टेंशन मत लेना! मेरी बातें याद कर लेना!’

‘तुम्हारी बातें नहीं, तुम याद आओगी प्राची।’ मैंने घुटन भरे शब्दों में कहा। प्राची मेरे घुटन को समझ रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि उसके जाने के बाद मैं लूट जाऊंगा। उसके बिना पूरा स्कूल हीं मेरे लिए सुनसान हो जाएगा। मैं कामयाब तो क्या

आप इस बारे में सोच भी नहीं पाऊंगा। उसके बिना मैं सफलता के रास्ते से भटक जाऊंगा।

‘अंडरस्टैंड आदर्श अभी बहुत वक्त बाकी है!’

‘प्राची तुम मेरा साथ दोगी न?’

‘हां! कामयाब होने के लिए, ना कि प्यार करने के लिए।’

‘फिर वही बात।’

‘तो क्या?’

‘तुम प्रॉमिस करो कि तुम मेरा साथ दोगी।’

‘नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकती! लाइफ में बहुत सारे मोड़ आते हैं। मैं भरोसे के साथ नहीं कह सकती।’

प्राची के इन बातों से मुझे जोर का झटका लगा। ऐसा लग रहा था कि वह अभी से मुझसे दूर जाने लगी है।

‘प्राची तुम मुझे समझती हो न!’

मेरे शब्द हल्के पड़ गए थे। ऐसा लग रहा था जैसे मैं अंदर से रो रहा हूं।

‘हां, तभी तो तुम्हारे इतने करीब नहीं आना चाहती हूं।’

‘क्यों?’

‘क्योंकि तुम मेरे प्यार में अपना अस्तित्व खो दोगे।’

‘अस्तित्व?’ मैं फुसफुसाते हुए बोला।

‘हां तुम्हारे टैलेंट का अस्तित्व! मैंने लड़कों को प्यार में बर्बाद होते देखा है। इसलिए तुमसे डर रही हूं।’

‘प्राची मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगा।’

‘मैं जानती हूं तुम प्यार में खो जाओगे। फिर तुम्हारा टैलेंट?’

‘मैं उसे ठीक होने नहीं दूंगा!’

‘मिस्टर.... समझने की कोशिश करो। जब मैं तुमसे प्यार नहीं करती हूं तब तुम इतने बेचैन हो रहे हो। जब करने लगुंगी तब तुम्हें प्यार के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देगा। संभालो अपने आप को।’

‘प्राची मैं संभलने के बदले डूबे जा रहा हूं। यह मुझसे नहीं हो पाएगा।’

‘लव क्या करना चाह रहे हो तुम! अपने सपनों से... अपने लक्ष्य से दूर भागना चाहते हो?’

‘मैं इन सपनों से भागना इसलिए चाहता हूं कि तुम मुझसे दूर मत भागो। यदि तुम मुझसे दूर न सफलता मेरे साथ होगा।’

‘लव तुम्हारा टैलेंट तुम्हारी सफलता है, मैं नहीं!’

‘प्राची तुमसे मुझे साहस मिलता है। मैं चाहता हूं कि तुम यूं ही मुझे प्रोत्साहित करती रहो।’

‘अंडरस्टैंड लव, मैं तो हमेशा कर रही हूं। मैं तो चाहती ही हूं तुम मुझसे हर कदम आगे निकलो।’

‘वहीं कुछ कदम आगे निकल गया हूं तुमसे, प्यार में। और तुम पीछे रह गई हो।’

‘कितने पागल हो तुम! मैं तो अभी यहीं हूं... मैं कहां कह रही हूं कि स्कूल छोड़

रही हूं।' वह खिलखिलाते हुए बोली।

मेरे लबों पर अचानक मुस्कुराहट बिखर गया। वही मुस्कुराहट जो हमेशा मुझे घायल कर देती थी। मैं जिस मुस्कुराहट को हर वक्त ने करीब पानी के लिए तरसता था। कितनी खूबसूरत लग रही थी वह मुस्कुराहट में! उसकी मुस्कुराहट मुझे भी मुस्कुराने के लिए मजबूर कर देती थी। मैं खुद को मुस्कुराने से नहीं रोक पाता। जब भी रात के ख्वाबों में यह मुस्कुराहट याद आती है तो दिल धड़कने लगता है। उसे आंखों के सामने पाने के लिए बेकरार होता है। जब मैं ख्वाबों से उठता हूं तुम मेरे सामने रातों का अंधेरा होता है। उसकी मुस्कुराहट की बात ही कुछ निराली थी।

“मुस्कुराहट भी एक अजीब दास्तान है किसी को सताती है तो किसी को यादों में भी मुस्कुराहट दे जाती है।”

०००० ०००० ०००० ००००

पांच दिन बाद....

मेरे स्टडी टेबल पर रखे मोबाइल के वाइब्रेशन में मेरा ध्यान भंग कर दिया। उसके स्क्रीन पर एक नया नंबर था।

‘हेलो, कौन?’ मैंने पूछा।

‘तुम्हारी मिस.... प्राची!’

प्राची कि आवाज सुनकर मेरी धड़कनें बढ़ गई। वह 4 दिनों से क्लास नहीं आ रही थी। उसके बारे में कुछ पता नहीं लग रहा था। मैं उसके बिना दुनिया का सबसे अकेला इंसान मान रहा था।

‘कैसी हो?’ मैंने भरे स्वर में कहा। बड़ी मुश्किल से इतना शब्द अपने लबों से निकाल पाया।

‘बढ़िया तुम कैसे हो?’

‘तुम्हारे बिना नहीं कैसा हो सकता हूं, खुद समझ सकती हो।’

‘मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है।’

‘झूठी हो तुम! मुझसे क्यों छुपाई तुम न्यूटन इंटरनेशनल में पढने वाली हो।’

‘मिस्टर लव, सॉरी लभ पापा के अचानक के निर्णय से मुझे जाना पड़ा।’

‘अब हम कब मिलेंगे प्राची?’

‘पता नहीं! इस नंबर पर फिर कभी कॉल मत करना.... पापा का नंबर है।’

‘ठीक है.... मैंने तुमसे कुछ पूछा है..’

‘क्या?’

‘हम फिर कब मिलेंगे?’

‘पता नहीं! तुम अपना ख्याल रखना और हां अच्छे से पढ़ाई करना। ठीक अगले माह में मेरे स्कूल में टैलेंट टेस्ट होगा। तुम फॉर्म जरूर अप्लाई करना। शायद वहीं मिल जाएं।... अपना ख्याल रखना..... रखती हूं बाय!’

‘प्राची एक बार तुम्हारे लबों से 'मिस्टर रोमांटिक सुनना चाहता हूं। बोल

दो ना प्लीज़!’

‘मिस्टर..... अपना ख्याल रखना..... बाय!’

‘बाय!’ मैं गुमशुदा लबों से बोला।

वह फोन रख दी। यह बाय शब्द ना जाने मुझे क्यों बेवफा लगी। इतने खूबसूरत लबों से सुनते हुए भी मैं गम में डूबा जा रहा हूं। एकाएक मेरे पास खुशियां और तुम एक साथ पहाड़ जैसे टूट रहे थे।

(07)

एक माह बाद...

A.S college, bikramganj

कॉलेज के गेट पर सुंदर अक्षरों में इसका नाम गढ़ा गया था। ऐसा मेरे नजरों में पहली बार था जब CBSE स्कूल का टेस्ट सेंटर किसी बिहार बोर्ड कॉलेज में हो।

दरअसल एजुकेशन ड्राप्स से अलग होकर न्यूटन इंटरनेशनल स्कूल अपने प्रचार प्रसार के लिए टैलेंट टेस्ट कंपटीशन का आयोजन किया था। मेरे स्कूल से कुछ लड़के इसमें भाग ले रहे थे जिसमें मैं भी आठवीं क्लास से शामिल था। कंपटीशन अनुमंडल स्तरीय था इसलिए लड़के भी कुछ चुनिंदे थे। पता नहीं मेरे स्कूल को मुझसे कितनी उम्मीदें थी। इतनी उम्मीद है मैं खुद पर नहीं कर पाता था। प्राची की नजरों में कामयाब दिखने वाली आदतें मेरे सिर चढ़ गई थी। संघर्षों में मुझे हर बार जीत मिली पर प्राची से मैं हारता गया। उसे कभी जीत ही नहीं पाया। कोशिश तो बहुत किया पर हर बार निराशा ही हाथ लगी।

मैं हड़बड़ी में था ऐसा लग रहा था जैसे मेरे जिंदगी की ट्रेन छूट रही है। कॉलेज में एंट्री पिछले गेट से हो रहा था। जिसमें कबाड़खाने जैसी गेट थी। लग रहा था जैसे कई वर्षों से पेंट नसीब नहीं हुआ हो। वह भी मेरे जैसा जंगयुक्त हो गया था किसी के प्यार में नहीं बल्कि पेंट के इंतजार में।

मैं दनदनाते हुए पिछले गेट की तरफ बढ़े जा रहा था। तभी गार्ड चिखा 'यहीं खड़े रहो।'

लड़कों को क्रिमिनल की तरह चेक किया जा रहा था। ऐसा लग रहा था स्टूडेंट नहीं बल्कि क्रिमिनल टेस्ट दे रहे हो। क्रिमिनल स्टूडेंट हो सकता है लेकिन स्टूडेंट क्रिमिनल नहीं हो सकता। जांच करते वक्त मैं अंग्रेजी जमाने के क्रांतिकारी की तरह खड़ा था। लड़कियों को सुविधाएं और लड़कों को दुविधाएं। एक ही कॉलेज में दो अलग-अलग परंपराएं थी।

'शायद कुछ क्रिमिनल एग्जाम देने घुस आए हैं।' मैं फुसफुसाते हुए अपना रूम खोज रहा था।

फर्स्ट फ्लोर छान मारा पर मुझे अपना रूम नहीं मिल रहा था। सी-703 रटते हुए सेकंड फ्लोर पर जा रहा था।

'सी-703, सर वेयर इज माय रूम।' मैंने पास खड़े आदमी से पूछा। उसके शर्ट पर चमकदार स्टीकर लगा था जिससे वह परीक्षा नियंत्रक या कर्मचारी लग रहा था।

'फर्स्ट फ्लोर, लास्ट-फर्स्ट।' वह जल्दीबाजी में बोला।

उसके कहने के अनुसार मैं समझ सकता था कि फर्स्ट रूम के लास्ट बेंच के तरफ। मैं चुपचाप उसके कहे अनुसार नीचे अपना कमरा ढूंढने लगा।

'सी-703' बेंच पर लिखा देखकर अचानक मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट बिखर गई।

ऐसा लग रहा था जैसे रेगिस्तान में प्यासे को पानी मिल गई। यह रूम एंट्री गेट के ठीक सामने था जिससे होकर मैं कई बार गुजर चुका था।

कॉलेज के बीच में एक छोटा सा पार्क था जिसमें कुछ लड़के लड़कियां गप्पे लड़ा

रहे थे। मुझे इस वक्त प्राची की याद आ गई। उसके साथ बिताया खूबसूरत पल, खुशियां मुस्कुराहट सब एक साथ मेरे जेहन में चिल्ला रहे थे। मैं उसे याद नहीं करना चाहता था पर हकीकत तो यह था कि मैं भुल भी नहीं पा रहा था। उसकी यादें ना जाने मुझे किस मंजर में ले जाती थी। कभी-कभी यादें मुस्कुराहट देती तो कभी-कभी गम में सराबोर कर देती है।

“उसका क्या कसूर जिस पर हम फिदा हुए,
कसूर तो मेरे कातिल चाहतों का था,
उडनबाज तो मेरा खुद का दिल निकला,
वो तो खूबसूरत प्यार की एक मूरत सी थी।”

प्राची एक प्यारी गुड़िया थी। वह गुड़िया जो मुझे अपने रास्तों से भटकते हुए नहीं देख सकती थी। शरारती तो थी पर उसका शरारत कितना खूबसूरत था! उसकी छवि आकर्षक थी जो मुझे हमेशा अपने मोह में फंसाए रहती थी। उसका दूर जाना एक सपना भी नहीं था। यह हकीकत अब मेरे सामने था। हकीकत को झूठा क्या बनाना हकीकत तो हकीकत होता है।

“दूर जाना एक सपना भी नहीं था,
यह हकीकत अब मेरे पास था,
वह कामयाब देखना चाहती थी,
बस यही शब्द मुझे याद सा था।”

कई मिनट तक मैं यादों में खोया रहा। वार्निंग घंटी ने मेरा ध्यान भंग कर दिया। मैं हड़बड़ी में अपने क्लास रूम में दाखिल हुआ। मैं वह अंतिम स्टूडेंट था जिसका सीट खाली था।

०००० ०००० ००००

करीब 3 घंटे यानी परीक्षा के बाद मैंने गहरी सांस ली। हर सब्जेक्ट से कुल डेढ़ सौ प्रश्न थे। ऐसा लग रहा था जैसे बड़ी व्यस्तता के बाद राहत की सांस मिली हो। परीक्षा खत्म होने के बाद सभी के चेहरे पर राहत साफ झलक रहा था। जिस तरह फ्लाइट में पैक आदमी तीन-चार घंटे बाद एयरपोर्ट पर उतरता है उसी तरह सभी स्टूडेंट बाहर निकल रहे थे। सबके लबों पर कुछ इस तरह की प्रतिक्रिया थी। अक्सर हम सब किसी एग्जाम से बाहर आने के बाद गप्पे लड़ाने शुरू कर देते हैं।

‘कितना सॉल्व किये हो?’

‘120’

‘बस!’

‘मैंने तो सब कर दिया है।’

‘वाह!लेकिन सही कितने होंगे?’

‘पता नहीं!’

‘माइनस मार्किंग भी है।’

‘क्या?’ जैसे सामने वाले को अभी पता चला है। चेहरा देखने में बन रहा था।

मैं इन लड़कों को ऐसे बातें करते हुए देख कर मुस्कुरा रहा था। कुछ लड़के तो ऐसे बोल रहे थे जैसे फॉर्म भरने के ₹500 उनके दादा के खाता से निशुल्क आवंटित किया गया हो। कुछ बोल रहे थे कि इतने रुपए में तो ड्रामा का टिकट मिल जाता है। तो फिर ड्रामा और परीक्षा में क्या फर्क है।

मैं विकास को ढूँढ रहा था। तभी वह दूर से आते हुए दिखाई दिया।

‘क्या यार कहाँ थे तुम?’ मैंने उससे पूछा।

‘एडमिट कार्ड गिर गया था

‘अच्छा परीक्षा कैसा गया?’

‘यह कोई क्वेश्चन थे!’

‘क्यों, क्या हुआ?’ मैंने आश्चर्य से पूछा।

विकास परेशान नजर आ रहा था। मैंने ज्यादा कुछ पूछना उचित नहीं समझा क्योंकि वह बहुत निराश था। भले ही वह टेस्ट देने बैठा हो लेकिन उसे क्रिकेट पिच की याद आती होगी। क्रिकेट पिच जिसे वह अपना प्रेमिका मान बैठा था। अगर क्लास में बैठे-बैठे कुछ सोच रहा होता है तो समझ लेना कि क्रिकेट में वह खो गया है। उसे अपने द्वारा लगाए गए छक्के या गेंद से आउट होने का सीन याद आती होगी।

मैं बातें करते हुए घर पहुंचा। घर पहुंचते ही पापा पूछ डाले

‘टेस्ट कैसा गया है!’

‘बहुत बढ़िया पापा!’

मेरे जवाब से पापा बहुत खुश थे।

‘10 दिन बाद प्राइज वितरण समारोह है। आप आएंगे न पापा?’ मैं अनुरोध के भाव से बोला।

पापा अक्सर अपने टीचिंग वर्क में बिजी रहते थे। उन्हें अपने स्कूल से छुट्टी बड़ी मुश्किल से मिल पाता था।

‘जरूर। आपका प्रदर्शन अगर अच्छा रहा तब!’

‘सच में आएंगे ना पापा!’

‘हां। लेकिन यह ध्यान रखिए कि मैं आपको जीतते हुए देखना चाहता हूं।

‘पापा आपका यही प्रोत्साहन मेरे सफलता का वजह होता है।’

पापा अपना मेरे सिर पर अपना हाथ रख कर चले गए। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे सारा जग ही मेरे अंदर सिमट गया। मेरे अंदर एक सफलता की जिह्वा थी जो मुझे सफल सफल करते-करते सफल बना देती। प्राची की बातें हर वक्त मेरे जेहन में चलती रहती थी कि मुझे कामयाब होना है और बस कामयाब होना है। वह मेरे साथ तो नहीं थी और उसका वादा हर वक्त मेरे साथ था, जो हर वक्त मेरे अंदर कोलाहल मचाए रहता था कि मुझे सफल बनना है, अपने सच्चे प्यार के लिए, एक परिवर्तन के लिए।

मैं हर वक्त उसे ढूँढता रहता। पिछली बार अपने स्कूल में देखा था जिसमें से

वह मुझसे बिना बताए न्यूटन इंटरनेशनल में चली गई। तब से नजरें उसके खोज में व्याकुल लगती हैं। मुझे सिर्फ इतना पता था कि वह न्यूटन में पढ़ती है और वह भी अपने फ्रेंड के कहने पर। मैं चाहता था कि वह मुझे कहीं दिख जाए पर अब तक नहीं दिखी थी। जब से मुझसे दूर गई है मैं खोया-खोया महसूस करता हूं। जब भी न्यूटन इंटरनेशनल स्कूल के तरफ जाता हूं तो निरीक्षण वाली निगाहों से देखता हूं। शायद वह मुझे कहीं दिख जाए। उसके बिना यह जिंदगी खामोशियों में गुजर रही थी। मुझे प्राची का इंतजार था। उसके प्यार का इंतजार था। आई एम वेटिंग फॉर हर लव...

०००० ०००० ००००

दस दिन बाद,
गांधी मैदान, तेंदुनी हाई स्कूल।

कार्यक्रम का शुरुआत 10:00 बजे से होना था। मैं 8:00 बजे से पहुंचकर गुल्ली डंडा हांक रहा था। कौन कार्यक्रम का विजेता है और कौन नहीं? सिर्फ यही सुनने के लिए हम सब उतावला थे। हर किसी के अंदर ऐसा एहसास हो रहा होगा कि वह विजेता हो। निसंदेह मेरे अंदर भी था।

यह पल पहाड़ जैसा टूट रहा था। एक-एक क्षण चुनौती भरा था। ऐसा लग रहा था जैसे धड़कन तेज कुछ तेज धड़क रही हो। बेसब्री से आंखें उस मंच के तरफ देख रही थी जहां से विजेता की उद्घोषणा होने वाली थी।

एंकर रह-रहकर मुझे इरिटेट कर जाता। उसकी बातों से मुझे चिड़चिड़ापन हो जाता। वह कुछ इस तरह बोल रहा था-”बस कुछ नहीं क्षण में हमारे सम्मानीय नेता आपके समक्ष होंगे। वह पल उसका इंतजार आप बेसब्री से कर रहे हैं वह आ ही गया है।”
एंकर करीब दो घंटे से ऐसी बातें बोल रहा था। उसका पल खत्म ही नहीं हो रहा था जो मुझे बार बार चिड़चिड़ा होने पर मजबूर कर रहा था। मुझे किसी का बेसब्री से इंतजार बिल्कुल पसंद नहीं है। जन समूह में शामिल लोगों की आंखें थक चुकी थी। वे किसी पहाड़ी से चढ़कर उतरे पर्वतारोही की भाँति शिथिल पड़ गए थे।

करीब 11:00 बजे धूल उड़ाती गाड़ियों का काफिला एकाएक गांधी मैदान में आकर ठहरा। एंकर अब पुरे जोश के साथ बोल रहा था-”हमारे विधायक जी अब मंच पर पधारने वाले हैं। वह पल आपके सामने है जिसका आप बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।”
नेता जी मंच पर चढ़े। तालियों के शोर से पूरा ग्राउंड झूम उठा।

आधे घंटे बाद

‘अब आपके समक्ष वह प्रतिभा मंच पर दिखेंगे जिनके लिए आप का सीना गर्व से चौड़ा हो जाएगा। जी हां! मैं सुनाने वाला हूं टैलेंट टेस्ट के लिस्ट में शामिल उन पंद्रह प्रतिभाओं को जिन्होंने इस लिस्ट में अपना नाम शामिल करके शहर ही नहीं बल्कि पूरे अनुमंडल में अपना नाम रोशन किया है।’

एंकर की बातें सुनते हुए लोग एकटक मंच के तरफ देख रहे थे। एंकर ब्लैक जैकेट में था।

‘फर्स्ट पैलेस विनर.... लव पांडे प्लीज कम ऑन द स्टेज।’ एंकर के लोगों से यह शब्द सुनकर लोगों के चेहरे पर मुस्कुराहट बिखर गया। पूरा वातावरण तालियों कि शोर से गूंज उठा।

मैं अब भी सहमें बैठा था। विकास और पीयूष मेरे दाएं और बाएं बैठे थे। मुझे एंकर की बातों पर अब भी विश्वास नहीं था।

‘अरे यार, तुम ऐसे क्यों बैठे हो? तुम्हारा नाम लिया गया है और प्राइज विनर में... और तुम हो कि मुंह लटकाए बैठे हो। तुम्हें कोई फर्क ही नहीं पड़ता।

‘तुमको अपना नाम भी नहीं याद है का....?’ विकास मुझ पर गुस्साते हुए बोला।

आखिरकार मैं स्टेज पर पहुंचा। मुझे यकीन नहीं था कि मैं फर्स्ट अवार्ड विनर बन जाऊंगा।

स्टेज पर पहुंचते हैं मेरे हाथों में मुख्य अतिथि और कुछ विशेष अतिथियों द्वारा अवार्ड और चेक प्रदान किया गया।

मैंने ऑडियंस के पीछे देखा पापा सजल आंखों से मुस्कुरा रहे थे। मुझे खुद पर विश्वास नहीं था कि उनके सपनों को पूरा कर पाऊंगा। निसंदेह उनकी आंखों में खुशी के आंसू थे। ऐसे लग रहा है मेरे से हाथों में बड़े अवार्ड में और चमक बिखर गया हो। अचानक मेरी नजरें लेडीस साइड में बैठी प्राची पर चली गई। वह रेड कलर साड़ी में थी। उसके इयररिंग्स चमक रहे थे। वह बहुत खूबसूरत दिख रही थी और मेरे जीत पर तालियां बजा रही थी। जैसे ही मेरी नजर उस पर पड़ी वह वहां से उठ कर जाने लगी।

ना जाने मुझे क्या हो गया। मैं अवार्ड लेकर स्टेज से नीचे उतरा और उससे मिलना चाहा। गर्ल्स साइड में जाते थे देख विकास और पीयूष मेरे पीछे दौड़े।

‘प्राची.... प्राची रुक जाओ प्लीज!’ मैं हताश प्राची के पीछे दौड़ा। ना जाने उसे क्या हो गया, जो मुझे देख कर जाने लगी। मेरे वहां पहुंचते ही वह गुम हो चुकी थी। मेरे अंदर गम प्रवाहित होने लगा। ऐसा लगा जैसे मेरी धड़कनें निकाली गई हो। मैं उसके पास होकर भी उसे पा नहीं सका। एक कातिल नजरें मुझे बार-बार सता रही थी।

इस भीड़ में मुझे घोर तनहाई नजर आ रही थी। ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मैं दुनिया का सबसे अकेला इंसान हूं। मुझे नहीं मालूम था इश्क का अंजाम इतना भयावह होता है।

यहां से जाने के बाद मैं गम में डूबा रहा। ना ही खाने की हिम्मत होती ना ही कुछ करने की। हर लम्हा तनहाई से गुजर रहा था। यह तनहाई मुझे बार-बार तड़पा रही थी। हर पल मेरे ऊपर काटो जैसे बरस रहा था। ऐसा लग रहा था किसी ने मेरा दिल चुरा लिया हो और मैं उसके बिना तड़प रहा हूं। जो कभी हर रोग की दवा हुआ करती थी वही आज रोग बन गई है। वह रोग जिसकी कोई दवा नहीं है।

(08)

Senior secondary school
Bikramganj,rohtas(bihar)

मैं एजुकेशन ड्रॉप्स आठवीं पास करने के बाद बिहार बोर्ड कॉलेज में एडमिशन करवाने के लिए सीनियर सेकेंडरी स्कूल बिक्रमगंज चुना। यह मेरे पापा का निर्णय था जिसे मैं टाल नहीं सकता था। कॉलेज के बाहर बारह फिट उँचा विशालकाय कॉलेज का गेट था जो चहारदीवारियों से घिरा था। गेट के ऊपर बड़े अक्षरों में कढ़ाई की गई थी- 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिक्रमगंज रोहतास (बिहार)'

कॉलेज के ठीक सटे हुए एक बड़ा स्टेडियम था जो कॉलेज के ही फंडस बनवाया गया था। दर्शकों के बैठने के लिए ऊँची सीढ़ियाँ थी। दोनों तरफ के सीढ़ियों के बीच कुछ कमरे थे। मेरे अनुसार यह Sports रूम और क्रिकेट से जुड़े अन्य लोगों के लिए बना था। कमरे में लगी काँच की खिड़कियाँ जो पूरी तरह से चकनाचूर हो चुकी थी। लगभग आठ कमरे थे जिसके आसपास बरामदे भी थे। आसपास नारियल के कुछ ऊँचे पेड़ थे जिसके नीचे पशु शांत चित्त होकर चारा खा रहे थे। बिहार के क्रिकेट ग्राउंड में पशुओं के साथ खेलना तो आम बात है।

इस स्टेडियम को देखकर मेरे मन में भारतीय खिलाड़ियों के स्टेडियम का चित्र उभर आता जिन्हें मैं अक्सर टीवी के छोटे स्क्रीन पर देखा करता था। कुछ वर्ष पहले यह स्टेडियम केवल मैदान हुआ करता था जो मवेशी चारागाह के काम आता था। कुछ झाड़ियाँ इसके चारों तरफ लगे रहते। यह एक बदसूरत जगह था जिसमें कुछ बच्चे क्रिकेट खेला करते थे। लेकिन अब सब कुछ बदल गया था। यहां हजारों की भीड़ इकट्ठी हो सकती थी। राजनीतिक और सामाजिक कार्यक्रम का अड्डा बन चुका था यही नहीं नाईट मैच फुटबॉल मैच आदि के लिए उपयुक्त जगह था।

मेन गेट के अंदर रुख करने के बाद मेरे सामने पिंक कलर से पेंट किया हुआ ऑफिस था। बिल्कुल महलों की तरह जिसके बीच में सिढ़ियाँ और चारों तरफ खुशबू वाले आकर्षक फूल लगाए गए थे। मैं ऑफिस के बाहर खड़ा हो गया क्योंकि अंदर लड़कियों का कब्जा था। वैसे भी मुझे भिड़ से नफरत है। लड़कियों के बाहर आते ही मैं अंदर दाखिल हुआ। जितना सुशील कलर्क का चेहरा था उतना ही रुखी आवाज। ऐसा लग रहा था जैसे वह वर्षों से मुस्कुराया तक नहीं।

‘मैट्रिक या इंटरमीडिएट?’

वह मुझे घूरते हुए पूछा।

‘मैट्रिक।’ मैंने जवाब दिया। मेरे आवाज में नरमी थी। मेरे हाथों में बिहार बोर्ड के आठवीं के टि.सी और मार्कशीट थे।

मुझे बड़ा बुरा लग रहा था क्योंकि CBSE से पढ़कर बिहार बोर्ड में नौवीं के एडमिशन के लिए आया था।

‘ओह! नौवीं में एडमिशन लेना है?’

कलर्क अपने दस्तावेजों पर कलम चलाते हुए बोला। उसका उम्र लगभग पैंतीस का होगा। उसके पतले शरीर पर शर्ट बिल्कुल चिपका हुआ था। मेरी नजरें उन दस्तावेजों पर पड़ी जो पीले पड़ गए थे। उन पर धूल पूरी तरह से जमा थी। ऐसा लग रहा था कई वर्षों से कोई छुआ तक नहीं।

मैं जगह-जगह रखे वर्षों पुराने दस्तावेजों को निहार रहा था। चूहों ने उन पर आजमाइश भी की थी। पूरा टेबल कागजों से ढका हुआ था। अगर निर्जीव टेबल, सजीव होता तो सांसो के बिना दम तोड़ देता है गनीमत तो यह है कि वह निर्जीव है। छत से लटका हुआ सरकारी पंखा ठीक उसी तरह चल रहा था जिस तरह सरकारी काम होता है। कमरे में सिर्फ एक खिड़की थी जो प्रकाश का एकमात्र साधन था लेकिन पूरे कमरे को जगमगाने की काबिलियत हासिल कर लिया था। कलर्क के टेबल पर उसका नेम प्लेट रखा हुआ था जिस पर 'krishna singh, clerk' लिखा हुआ था। नेम प्लेट देखकर मुझे उसका नाम पता चल गया।

‘आपका डाक्यूमेंट्स?’ वह इस बार थोड़ा नरमी से पेश आते हुए मुझसे बोला। मेरा नजर उसके चेहरे के तिल पर पड़ी। जितना बेडौल वह दिल था उतना ही बेडौल उसका आवाज।

मैंने अपने फाइल से जरूरी डाक्यूमेंट्स निकाल कर उसके सामने रख दिया। वह डाक्यूमेंट्स को आंख गड़ाकर देख रहा था।

‘फोटो...?’ वह फिर चिखा जैसे मैंने कोई अपराध कर दिया हो।

‘ओ!’ मैंने माथा ठोका।

वह फोटो देखते हुए मेरे चेहरे के तरफ पहली बार इतने ध्यान से देख रहा था।

‘क्या मैं ऐसा नहीं दिख रहा हूं?’ मैंने बोलने के लिए सोचा पर उसके आगे कहने का हिम्मत ना हुआ।

‘विश्वंभर मध्य विद्यालय..?’

मेरे तरफ मुस्कुराते हुए वह बोला।

‘यस!’

‘ग्रेड बी..’ वह बोलकर मुस्कुराने लगा। यह कोई निश्चितता वाली मुस्कुराहट नहीं थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह जबरदस्ती मुस्कुरा रहा हो।

मुझे याद था। यह मेरे मार्कशीट का ग्रेड था।

‘यस सर!’ मैंने जवाब में कहा।

‘आचरण उत्तम!’ वह फिर हंसा।

उसके चेहरे की हंसी बिल्कुल नहीं जम रही थी। मेरे अनुसार वह जबरदस्ती हंस रहा था। मेरा वश चलता तो मैं उसके हंसी पर प्रतिबंध लगा देता।

‘देखने में मेरा करैक्टर बुरा लग रहा है क्या तुम्हें?’ मैं खुद में बुदबुदाते हुए बोला जिसे वह सुन नहीं सकता था।

मैं उसके सामने नहीं कर सकता था क्योंकि मेरे अंदर इतनी हिम्मत नहीं थी। शायद वह मेरा एडमिशन भी कैंसिल कर देता।

कुछ देर बाद उसने मुझे फॉर्म भरने के लिए बोला जिसे कुछ ही मिनटों में मैंने रगड़ कर उसे वापस कर दिया। वह एक बार फिर फॉर्म को बेरुखी निगाहों से निहार रहा था।

‘यहां साइन करो!’ वह अंगुली से संकेत करते हुए चिखा।

‘ओह!’ मैंने सिर पर उंगलियां रगड़ते हुए फुसफुसाया। सामने पड़े फॉर्म को मैंने झटके से अपने हाथों में ले लिया फिर उस जगह पर अपना साइन जमा दिया।

‘मई के फर्स्ट वीक से क्लास स्टार्ट होगा..’ वह फिर से फॉर्म को घूरते हुए बोला।

‘कब से सर?’ मैंने कहा। मेरे कहने का मतलब था कि मई में किस दिन से?

‘5 मई..’ वह प्रत्युत्तर में बोला।

रिसीविंग को बुरी तरह से नहीं निचोड़ते हुए मेरे आगे बढ़ाया जिसपर एडमिशन व रोल नंबर अंकित था। उस छोटे टुकड़े पर मेरा एडमिशन नंबर 609 लिखा था। इतने सारे डाक्यूमेंट्स के बदले सिर्फ कागज का एक टुकड़ा!

मैं एडमिशन करा कर बाहर आया। ऐसा लग रहा था जैसे अब खुले संसार के वातावरण में आ गया हूं।

०००० ०००० ००००

6 मई से मैंने कॉलेज ज्वाइन कर लिया। यह एक अच्छा अनुभव था। कुछ नए दोस्त बने तो कुछ पुराने रिश्तों में मिठास आया। विष्णु प्रभाकर, राज सोनी, अश्विनी, मोहित मेरे नए और लंगोटिया यार बने। हम जो भी करते एक साथ करते थे। विष्णु प्रभाकर का फ्लैट कॉलेज के ठीक बगल में था। जब मर्जी करता है तब वह घर से क्लास में जाकर हाजिर हो जाता। उसके पास samsung का टच स्क्रीन फोन था जिसका इस्तेमाल हम लोग कॉलेज खुलने के पहले इंटरनेट के लिए किया करते थे। उस छोटे से फोन पर वीडियो चलता था और यह तब तक चलता था जब तक कॉलेज का प्रेयर (प्रार्थना) खत्म नहीं हो जाता। कॉलेज के बाहर निर्माणाधीन कमरा हमारा अड्डा था। हम खिड़कियों से झांकते थे कि कब प्रार्थना शुरू हुआ और कब खत्म। कभी-कभी टीचर हमें देख लेते थे लेकिन वह बिना कुछ बोले चिढ़े हुए रहते थे। कभी गुस्सा कर वे लोग कॉलेज का गेट बंद कर दिया करते तब हम आपातकालीन टूटे हुए खिड़की से दाखिल हो जाते। यह खिड़की कॉलेज के एक कोने में थी। प्रार्थना एक घंटे चलता लेकिन योगा आधे घंटे। हमें प्रेयर से नहीं योगा से डर था।

उन दिनों दोस्तों में विष्णु प्रभाकर मेरे लिए कुछ खास इसलिए था क्योंकि वह प्राची के स्कूल न्यूटन इंटरनेशनल स्कूल से पढ़कर आया था। वह प्राची की यादें ताजा करने में मेरी मदद करता था। जब विष्णु पहली बार मुझसे मिला तब कुछ ऐसे बातचीत हुई।

‘पहले कहां पढ़ते थे?’ मैंने पूछा।

‘न्यूटन इंटरनेशनल..’ विष्णु प्रभाकर ने जवाब दिया। ‘और तुम?’

‘एजुकेशन ड्रॉप्स!, मेरे स्कूल के लड़के न्यूटन इंटरनेशनल में पढ़ने जाते हैं।’

मैंने जवाब दिया।

‘अच्छा! न्यूटन भी तो इसी का ब्रांच है ना?’ विष्णु चौका।

‘नहीं दोनों अलग हो गए थे कुछ साल पहले।’

‘तो तुम्हारे स्कूल से प्राची, निभा, पीयूष सब है।’

‘पियूष भी पढ़ता है?’ मैंने आश्चर्य से पूछा क्योंकि मुझे भी उसके बारे में अब तक कोई जानकारी नहीं थी।

‘हां! पर आप क्यों CBSE छोड़कर बिहार बोर्ड में पढ़ने लगे?’

‘दरअसल तुम्हारी तरह मेरी भी कुछ प्रॉब्लम्स है।’

‘वैसे जानते हैं प्राची पढ़ने में तेज है। कितने लड़के हर रोज उसके पीछे पड़ते हैं लेकिन वह किसी को कुछ वॉल्यू ही नहीं देती है।’

प्राची का नाम सुनकर कुछ देर तक स्तब्ध रहा। मेरे लिए उसका प्यार अमिट था। मेरी नजरें उसके एक झलक पाने के लिए बेताब रहती है। उस दिन जब न्यूटन इंटरनेशनल के टैलेंट टेस्ट अवार्ड फंक्शन वाले स्टेज पर स्वागत गीत गई थी उसके बाद से उसे मेरी नजरें ढूंढ रही थी। मुझे याद है उसका वह लाल ड्रेस वाली साड़ी, उसकी खूबसूरत निगाहें उसका कातिलाना अंदाज.... सब याद था। कहीं ना कहीं उस कातिलाना चेहरे से नफरत जरूर था। मैंने सोचा मेरे जख्मों पर प्राची मरहम लगा देगी। कमबख्त मेरे अंदर अंधविश्वास ही निकला। जो प्राची मैंने ख्वाबों में देखा था वह बदल चुकी थी।

‘आदर्श आप कहां खोए हैं?’ प्रभाकर के आवाज में एकाएक मुझे यादों से बाहर लाया।

‘कुछ नहीं! बस पुराने लम्हों में खो गया था।’ मैं यादों के घूट पीते हुए बोला। भीगी पलकें मेरे प्यार के दर्द को बयां कर रही थी। मेरे आंखों के अंतिम भाग में आंसू थे जो कभी भी बाहर आ सकते थे।

‘पुराने लम्हे???’ विष्णु चौका।

‘हां वह पुराने और स्कूल वाले दिन याद आ गए थे।’ मेरी आंखें डबडबा गईं। विष्णु मुझे संभालने की कोशिश कर रहा था।

०००० ०००० ००००

(09)

1 साल बाद।

मैं अपने फ्लैट के ऊपर दीपक भाई के कमरे में बैठा था जो मुझसे दो साल सीनियर थे। मैं मैट्रिक में पढ़ता था और वह इंटरमीडिएट की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने अपने पास रखे बिस्किट के प्लेट को ऑफर किया। लोकल क्वालिटी का बिस्किट था लेकिन उनके ऑफर को ठुकराने का मतलब था कि मैं उनके बातों को भी इनकार कर रहा हूं।

‘शिवू किस स्कूल में पढ़ते हो?’ मैंने शिवू को उस कमरे में आते देख बोल पड़ा। वह दीपक भाई के मामा का लड़का था।

‘न्यूटन इंटरनेशनल स्कूल!’

वह करीब दस साल का लड़का था। उम्र और पालन पोषण के अनुसार चेहरा क्यूट था। बिना फैमिली की लड़के किस हिसाब से रहते हैं मुझे मालूम था।

‘कितने महीने से पढ़ रहे हो?’ मैंने पूछा।

‘चार महिने से भैया।’

‘फ्रेंड वगैरह बनाए हो?’ वह मेरे इस सवाल पर मुस्कुराया।

‘हां। सोनु, राघव, नितिन...’

‘बस.. बस’ मैं उसके फ्रेंड्स में लड़कों का लिस्ट खारिज करते हुए बोला।

‘प्राची को पहचानते हो?’ मैंने उत्सुकता से पूछा।

इस प्रश्न को पूछने में उत्सुकता मुझे इस वजह से भी था क्योंकि प्राची अपने जूनियर स्टूडेंट्स से दोस्ती करने में माहिर थी। उसे नन्हें बच्चों के साथ लंच करने में अच्छा लगता था। मैंने उसके अंदर नादानियों को देखकर अक्सर मुस्कुरा देता था।

‘हां, मैं उनको पहचानता हूं।’ जल्दीबाजी में जवाब दिया क्योंकि उसे स्कूल जाना था। अपने किताबों को बैग में इकट्ठा कर रहा था।

‘कैसे पहचानते हो उसे?’

‘हम लोग साथ लंच करते हैं! इसी वजह से हमारी दोस्ती हो गई है।’

‘क्या तुम जानते हो वह किस क्लास में पढ़ती है?’ मैं शिबू को आजमाने के लिए पूछा।

‘8th क्लास।’

अब वह क्लास जाने के लिए तैयार था इसलिए मैं आगे कुछ पूछना नहीं चाहता था। वह बाय कहकर कमरे से बाहर निकल गया।

दीपक चुपचाप हमारे बीच बातचीत को सुन रहे थे।

‘कौन है प्राची..?’ शिबू के जाने के बाद दीपक भाई मुझसे पूछे।

‘पहले मेरे क्लास में पढ़ती थी, एजुकेशन ड्रॉप्स पब्लिक स्कूल में!’

‘और अब?’

‘मुझसे दो साल पीछे रह गई। 8th में है।’

‘कोई कनेक्शन तो नहीं था?’

‘थोड़ा बहुत!’ मैंने खामोशी से उत्तर दिया।

‘थोड़ा बहुत!’ कहते हुए वे बेड से उठ बैठे।

‘हां!’

‘तो आप दोनों अलग कब हुए?’ शायद फिर मेरे लव स्टोरी से भावुक हो रहे थे। फिर छोटे कहानियां और लेख लिखने में माहिर थे।

‘दरअसल मेरे स्कूल न्यूटन इंटरनेशनल के प्रिंसिपल और डायरेक्टर में तनातनी हुई तो डायरेक्टर ने अलग स्कूल न्यूटन इंटरनेशनल खोल लिया और वह उसी में चली गई।’

‘तो अब बातचीत कैसे होती है?’

‘अभी बातचीत नहीं होती है। जब से वो न्यूटन इंटरनेशनल हो गई है।’

‘क्यों?’ दीपक चिंतित मिजाज से बोले।

‘क्योंकि ना उसके पास पर्सनल फोन है और ना ही मेरे पास!’
दीपक अपने होठों को दांतों तले दबा लिये। मैं भी उसके सोच में डूबा था। हम दोनों कुछ मिनट तक इसी अवस्था में एक दूसरे को रह रहकर देख रहने लगे।

‘तो कभी उसके स्कूल में ढूंढने या बातचीत का प्रयास नहीं किए?’

‘प्रयास तो बहुत किया पर वो दिखी नहीं....हर बार निराशा ही हाथ लगी।’

‘तो बाद आप उसे कभी नहीं देखे?’

‘देखा था एकबार जब उसके स्कूल के टैलेंट टेस्ट का विनर बना था। वो रेड कलर साड़ी में थी और बहुत खूबसूरत दिख रही थी। मुझे हमेशा उसका चेहरा याद आता है।’

‘क्या सच में खूबसूरत है?’ वे इस प्रश्न को पुछते हुए मुस्कुराये।

‘बहुत! मैं उसपर फ़िदा था।’

‘और वो?’

दीपक के इस प्रश्न ने मुझे खामोश कर दिया।

‘पता नहीं! पर अक्सर कहा करती थी कि मुझे कामयाब होते हुए देखना चाहती है।’

‘मतलब वो नहीं करती?’ दीपक गहरे साँस लेते हुए बोले।

‘करती थी! मैं उसे कई बार आजमा चुका था। मुझे देखे बगैर नहीं रह सकती थी। अपने नज़रों के सामने रखना चाहती थी।’

‘पर अब तो ऐसा नहीं करती न!’

‘शायद उसका नजरिया बदल गया।’

“बदल जाते हैं कुछ लोग वक्त बदलने पर,
जिनके लिए मैं खामियां गुनता रहा,
दुसरो के खुशी के लिए गैर बना दिए मुझे,
मैं गैरो में ढुंढता रहा उनके इश्क को।”

मैं ख्यालों में खोया रहा। कभी-कभी उसकी यादें मुझे गुदगुदा जाती है तो कभी खामोशियों में जीने पर मजबूर कर देती है। यह खामोशियां ना जाने मुझे किस मंजर में ले जाती है। दीपक भी सोच में डूबे थे। मेरा लव स्टोरी को सुनकर अपने लव स्टोरी की याद आती होगी। शायद वह कुछ इसी तरह के यादों में गुम थे। यह यादें ऐसी होती है कि खुशियां और गम दोनों को साथ समेट लाती हैं।

‘यादें बड़ी बेवफा होती है! कोई कुछ देर के लिए दूर होता है तो कोई हमेशा के लिए। जब कोई हमेशा पास रहकर नहीं मिल पाए तब हर वक्त उसकी कमी खलती रहती है और जब कोई हमेशा के लिए चला जाता है तब यादें कम करती है क्योंकि हम यह सोच लेते हैं कि अब यादों में ही जीना है।’ दीपक गहरी सांस लेते हुए बोले।

‘सही बोल रहे हैं आप। मुझे उसकी एक बात हमेशा खनकती है कि वह मेरी कामयाबी देखना चाहती है। जब वह दूर होना चाहती है तो मेरी कामयाबी से उसे क्या मतलब?’

‘लव, आपके प्रतिभा के आगे वो अपने प्यार की बलि दे दी। जिंदगी की

वास्तविकता समझाकर गई है। शायद आप कामयाब हो जाएं तो आपसे मिले ! इंतजार कीजिए तब तक।’

‘दीपक भाई मैं उसके प्यार का इंतजार कर रहा हूं आई एम वेटिंग फॉर हर लव!’

‘कुछ चीजों का इंतजार करना पड़ता है क्योंकि उनके पीछे बहुत बड़ा मकसद होता है।’

मैं दीपक की बातों को ध्यान से सुन रहा था।

‘मकसद! क्या सचमुच प्राची बहुत बड़ा मकसद देकर गई है!’ मैं खुद ने फुसफुसाया।

वह मुझे कामयाब देखना चाहती है बस यही बड़ा मकसद है। शायद प्यार से डरने वाली है वो। अपनी जिंदगी से मुझे दूर रखना चाहती है। वैसे भी उसकी लाइफ जो मन सो करें। मैं कौन होता हूं उसका! वह जहां भागना चाहे भागे। उसकी मर्जी वह मुझे चाहे या ना चाहे। मैं जबर्दस्ती तो उसे प्यार नहीं करवा सकता न! भगेडु है वो भागने दो। मुझे....मुझे बस कामयाब होना है!

‘वो ठीक कहती है कि मैं पागल हूं। सचमुच मैं पागल हूं। जो नहीं चाहता उसका भी पीछा कर रहा हूं। सिर्फ पागल ही नहीं बेवकूफ भी हूं मैं। जब वो मेरी कामयाबी देखना चाहती है तो मैं उसे अपना प्यार क्यों दिखाना चाहता हूं। नहीं दिखाना चाहिए। मैं तो पागल हूं...सचमुच पागल!’ मैं अपने मन में फुसफुसाया

मेरे मन में उसके लिए अब कोई ज्यादा चाहत नहीं थी। प्यार की मूरत है तो मैं उसे सजीव क्यों करना चाहता हूं।

०००० ०००० ००००

4pm

मैं अपना शर्ट सुलझाते हुए दीपक के कमरे में घुसा। दीपक अपने नोटबुक पर कलम रगड़ते जा रहे थे। शिबू अपने ड्राइंग बुक पर रंग भर रहा था। कमरे में घुसते हुए दीपक की नजरें मेरे तरफ पड़ी। शिबू मुस्कुरा रहा था। दीपक मुझे साइड में लगी कुर्सी पर बैठने का इसारा किये। मैंने कुर्सी पर अपना आसन लगा दिया। बाएं तरफ एक खिड़की था जो फिलहाल प्रकाश के लिए एकमात्र साधन था। उस पंखे की चाल मुझे राहत पहुंचा रही थी वरना मैं पसीने से भीग जाता। बेड पर चारों तरफ किताब बिखरे थे जो मेरी नजरों में भद्दा दिख रहे थे।

‘मैंने पूछा अपने दोस्त प्राची से आपके बारे में!’ शिबू मेरे कुर्सी पर बैठते हैं उत्सुकता से बोला।

मुझे पता था वह बच्चों की तरह अपना काम पूरी निष्ठा और ईमानदारी से कर रहा था। मेरे अनुसार शिबू पूरा जायजा लेकर हाजिर था।

‘क्या बोली?’ मैंने अपना सिर सहलाते हुए बोला। उतावला तो मैं भी था। दीपक हम दोनों की बातों को ध्यान से सुन रहे थे लेकिन कलम रगड़ते हुए। उनका ध्यान अपने काम पर कम लेकिन हमारे तरफ कान ज्यादा था।

‘आपको निराश करने वाला न्यूज़ लेकर आया है!’ दीपक कातिलाना अंदाज में मुस्कुराते हुए बोले।

‘क्या?’ इस बार मैं पूरे सीरियस होकर बोला।
शिवू के बातों को सुनने के लिए इंतजार कर रहा था।

‘वह बोल रही थी कि आप उनके साथ पढ़ते थे। आपको पहचानती है।’ शिवू बोला।

‘सिर्फ पहचानती है! इतना काफी है?’ खुद में फुसफुसाते हुए मैं आश्चर्यचकित था लेकिन यह आश्चर्य दुखद था।

‘आज भी लंच किये उसके साथ?’ मैंने शिवू से पूछा।

‘हां!’ इतना बोल कर वह चुप हो गया।

‘पढ़ने में अभी कैसी है? कितना रोल नंबर है उसका?’

‘पढ़ने में सबसे तेज हैं। और उस टेस्ट में नंबर वन आती है और उनका नंबर भी वन है।’ वह मुस्कुराते हुए बोल रहा था। उसके मासूम और सुंदर चेहरे पर मुस्कुराहट खिल रही थी।

‘दीपक भाई फर्स्ट आ रही है यह क्या कम है! प्रमोशन हो गया है उसका। मेरे स्कूल में हमेशा सेकंड आती थी।’ मेरे कहने के प्रतिउत्तर मैं दीपक भाई सिर्फ मुस्कुराए।

‘वह बोल रही थी कि आप हमेशा फर्स्ट आते हैं वह सेकंड! आपसे दूर होकर फर्स्ट आने लगी। आप उन्हें फर्स्ट आने ही नहीं देते थे। सोचती होंगी यहां फर्स्ट आना और संभव है तो दूसरे जगह आजमा लूं!’ शिवू बोला।

उसके फर्स्ट आने से मुझे खुशी थी। अपने स्कूल में उसे फर्स्ट आते देख नहीं सकता था पर अब सुन कर खुशी हो रही है। ईर्ष्या तो मुझे उसके दूर जाने का था। जब वह मुझसे अलग हुई थी तब इन आंखों में प्यार नहीं बल्कि अंगारे बरस रहे थे। उसके दूर होने का खबर जानकर मैं चूर चूर हो गया था। उस वक्त सिर्फ और सिर्फ उसके लिए नफरत ही था। सिर्फ यह सोचकर मैंने खुद को संभाला कि आखिर में उसका होता कौन हूं.... एकतरफा प्यार या जबरजस्ती उस से जुड़ने वाला शख्स? कोई जवाब नहीं था मेरे पास। वह मुझे कामयाब होते देखना चाहती है तो मैं अपने प्यार को क्यों दिखा रहा हूं? अंत में यही निष्कर्ष निकल रहा था कि मैं स्वार्थी। मैं उससे प्यार करने के लिए उसके प्यार करने की स्वतंत्रता का हक भी छीनना चाहता हूं।

वह अपनी मर्जी के लिए स्वतंत्र है चाहे मुझे प्यार करे या नफरत। लेकिन मैं कितना ही कुछ क्यों ना करूं पर मेरे दिल में उसके लिए प्यार जिंदा था। यह तड़प मुझे अलग होने नहीं दे रहा था। इतना जकड़ गया था कि निकल ही नहीं पा रहा था।

इतना तो खुशी जरूर हुआ कि कम से कम वह मुझे याद तो रखी है।

०००० ०००० ००००

अगले दिन

मैं दीपक भाई के कमरे में था।

‘शिबू को लेने मेरे साथ चलेंगे?’ दीपक एकाएक मुझसे पूछे।
उनके कमरे में ही सिर्फ वही थे इसीलिए मैं उनके साथ चलना उचित समझा।

‘चलूंगा लेकिन कहां?’

‘न्यूटन इंटरनेशनल स्कूल! 2:00 बज रहे हैं। छुट्टी का वक्त हो गया है।’ वे जवाब में बोले।

‘हां चलिए।’ मैंने पूरे सहमति से बोला।

शायद इसलिए भी था क्योंकि मैं चाहता था कि प्राची मुझे कहीं दिख जाए।

हम दोनों न्यूटन इंटरनेशनल की तरफ से हल्की-फुल्की बातें करते हुए पहुंचे। अचानक मेरे कानों में छुट्टी की घंटी का आवाज आया। अभी हम स्कूल के गेट के पास पहुंचे ही थे तब तक प्राची मेरे नजरों के सामने से पार हो गई। आज फ्राइडे था इसलिए वह व्हाइट शर्ट और स्कर्ट में थी। बहुत खूबसूरत दिख रही थी। बिल्कुल पहले जैसी। लेकिन उसके चेहरे पर कोई मुस्कराहट नहीं थी। उसने मेरे तरफ तनिक ध्यान भी नहीं दिया। मेरे सामने से ऐसे गुजरी जैसे हो रास्ते में किसी को देखना ही नहीं चाहती। इस वक्त मेरा दिल भारी हो चला था। एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा, मुझे देखे बगैर अपने रास्ते पर चल रही थी। कुछ देर बाद हमारे पास से लगातार कोई और स्कूल बस पार हुए और वह मेरे नजरों से ओझल हो गई। मेरा बेचैनी बढ़ते जा रहा था। लेकिन मैं अब कुछ नहीं कर सकता था।

हम आगे बढ़ आए।

‘प्राची थी वो?’ मैंने दीपक भाई से फुसफुसाते हुए कहा।

‘कौन?’ वे आश्चर्य और उत्सुकता के साथ बोले।

‘जो कुछ देर पहले हमारे ठीक सामने से होकर गुजरी! व्हाइट शर्ट और स्कर्ट में थी।’

‘वही थी!’ दीपक चौंके।

‘हां।’ मैं उन्हें बताते हुए खुश था। ऐसे खुश था जैसे किसी बड़े प्रोजेक्ट को समझा दिया हूं।

‘बहुत खूबसूरत है! लेकिन पहले क्यों नहीं बताये?’

‘देखे नहीं, उसने मेरे तरफ ध्यान तक नहीं दिया। वक्त बदलने के साथ सब कुछ बदल जाता है। चाहे वह रिश्ता ही क्यों ना हो।’

मैं अब पूरी तरह से निराश था। मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था। जो सोच कर आया था वह मेरे सामने से गुजर गया और मैं कुछ कर भी नहीं पाया। दीपक अंदर ऑफिस में गए और मैंने बाहर रहना ठीक समझा। उनके जाने के बाद एजुकेशन ड्रॉप्स में पढ़ रहे और भी क्लासमेट गुजरे लेकिन कोई मुझे पहचान तक नहीं रहा था। स्कूल से निकलते ही उसकी दोस्त राखी मुझे पहचान गई और जी भर के देख रही थी लेकिन लड़की होने के नाते कुछ बोल नहीं पा रही थी। हम दोनों शिबू को लेकर घर आ गये। मेरे पास याद और पछतावे के अलावा कुछ नहीं था।

उसको जलन है पर मुझे गुस्सा आ रहा था। यह लम्हा आया जो मेरे सामने से होकर गुजर गया और मैं कुछ कर ही नहीं पाया। मुझे कुछ तो बोलना चाहिए था प्राची से। लेकिन पता नहीं की मेरा एक तरफा इश्क उससे कुछ कह ही नहीं पाया बजाए यादों में जीने के।

“अब उसके साथ नहीं सही, उसकी यादों में जीना है!”

०००० ०००० ००००

(10)

कुछ महीने बाद
बिक्रमगंज के अंतिम दिनों...

उससे दूर हुए कई महीने बीत चुके थे। सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बिक्रमगंज से मैट्रिक का परीक्षा संपन्न हो गया। कुछ दिन गुजर भी चुके थे। प्राची अब बहुत दूर जा चुकी थी। कई महीनों बाद भी वह मुझे दिखी तक नहीं। वह मेरे बस खयालों और यादों में थी। अब वक्त आ चुका था बिक्रमगंज छोड़ने का। मेरा इतिहास बिक्रमगंज में सिर्फ मैट्रिक तक है था। अब इस इतिहास से मैं दूर जाने वाला था हमेशा, हमेशा के लिए।

हर शाम में उसके घर तरफ ढूंढने के लिए जाता था और कई घंटों तलाश की नजरों से ढूंढने के बाद भी वह मुझे दिखाई नहीं दे रही थी। मेरे पास दो दिन समय था और इन दो दिनों में सिर्फ उससे एक बार बातें करना चाहता था। वह प्यार ना करें लेकिन कम से कम मुझसे एक बार बात तो कर ले। हर शाम देर से घर लौटता था। मम्मी के पूछने पर कह देता था की कुछ जरूरी काम से गया था। इन दिनों मेरे चेहरे से खुशी और मुस्कराहट दोनों गायब थी। मैं हर वक्त उसके बारे में सोच सोचकर उदास रहता था। उसके साथ बीते वह सुनहरे पल, सुनहरी यादें सब मुझे तड़पा रही थी। इन सब को समेटे में बिक्रमगंज से जा रहा था। अब वह मेरे हर क्षण, हर नजरों से दूर जा रही थी।

अंतिम दिन

मैं इस दिन को देखना नहीं चाहता था। लेकिन यह दिन ठीक मेरे सामने खड़ा था जिस दिन हम यहां से फ्लैट खाली कर अपनी जन्मभूमि दीवानपुर में रवाना होने वाले थे। यह दिन मेरे लिए सबसे भारी था। आंखों में आंसू और हाथों में किताब है। अपनी किताबें मैं समेट रहा था। यही वह किताबें हैं जो मुझे हमेशा पढ़ने के लिए प्रेरित करती और मेरा मान सम्मान बढ़ा रही थी। मैं इनको समेट कर अपनी जन्मभूमि ले जाना चाहता था।

बिक्रमगंज छोड़ने के नाम पर मेरा रूह कांप रहा था पर मैं इस वक्त को टाल नहीं सकता था। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी जो वक्त को कुछ दिनों के लिए रोक दूं। हर क्षण मुझ पर भारी पड़ रहा था। हर क्षण मुझे दर्द दे रहा था। अपने जिंदगी के उस भाग को

हमेशा के लिए छोड़ रहा था जो मेरे प्यार से मुझे खुश रखा करते थे। आज अंतिम दिन था और आंखें अपने प्यार की तलाश कर रही थी। आज दिनभर प्राची के घर के तरफ छान मारा। वह कहीं भी नहीं दिखी। उसके घर का कोई खास पता मुझे मालूम नहीं था। हां इतना जरूर पता था कि उसके घर का रंग गुलाबी है। हम दोनों बस क्लासों और बाहर मिला करते थे। दिन भर उसके तलाश से थकने के बाद शाम को अपने जाने की तैयारियों में जुट गया।

यह शाम बहुत भारी था। इस शाम के अंतिम किरण को मैं बड़े ध्यान से देख रहा था क्योंकि इस प्यारे शहर को, अपने सुनहरे प्यार को हमेशा के लिए अलविदा कहने वाला था। वह प्यार जो मुझसे काफी दूर था। वह सामने तो नहीं थी पर दिल अलविदा नहीं कहा पा रहा था।

मैं उस कमरे में घुसा जिसमें मेरे द्वारा जीते गए अवार्ड थे। यह अवार्ड मुझसे तड़पा रहे थे। जिन्हें मैं प्राची के बदौलत हासिल कर पाया था। मुझे उसे धन्यवाद देना था पर वह कहीं दिखाई नहीं दी। अब मैं धन्यवाद भी नहीं बोल सकता था। काश वह मेरे दिल की आवाज को एक बार सुन लेती। मुझे देख कर खुश नहीं होती तो कम से कम अपने दिया गया प्रोत्साहन के लिए मेरे मुख से धन्यवाद तो सुन ले। यह अवार्ड मेरे सामने था लेकिन वह मेरे सामने नहीं थी, इसका मुझे गहरा गम था। उसके बिना तड़प रहा था। अंतिम बार उसे देखना चाहता था और यह ख्वाहिश बिक्रमगंज छोड़ते वक्त पूरी नहीं हो पाई। वह मेरे सामने नहीं थी लेकिन उसकी बातों मेरे जेहन में कोलाहल मचाए थी।

कभी-कभी वह प्यार में कुछ इस तरह कहा करती थी- “आदर्श मैं तुम्हें कामयाब होते हुए देखना चाहती हूं। जब तुम कामयाबियों के सिढ़ी पर पहुंच जाओगे तब मैं समझूंगी कि तुमने जिंदगी जीत ली। तुम उस दिन मेरे प्यार के काबिल हो जाओगे। उस दिन इतना प्यार करूंगी कि प्यार की नजदीकियां ही मिट जाएंगी।”

कितनी बड़ी ख्वाहिश थी उसकी! काश इन अंतिम क्षणों में वह मेरे साथ होती ताकि मैं जिंदगी के जंग से लड़ने के लायक हो जाता। उसके बिना यह अवार्ड और इनका कीमत सब कुछ फीका था।

०००० ०००० ००००

बिहारीपन लोग इश्क में धोखा खा सकते हैं लेकिन टैलेंट में नहीं। आज मैं चर्चित लेखक हूं, कामयाब हूं और वह गुमनाम है। मुझे पता नहीं वह आज कहां है पर दुआ करता हूं कि जहां भी हो खुश रहे।